जैन चित्र कथा

जनक नन्दिनी सीता

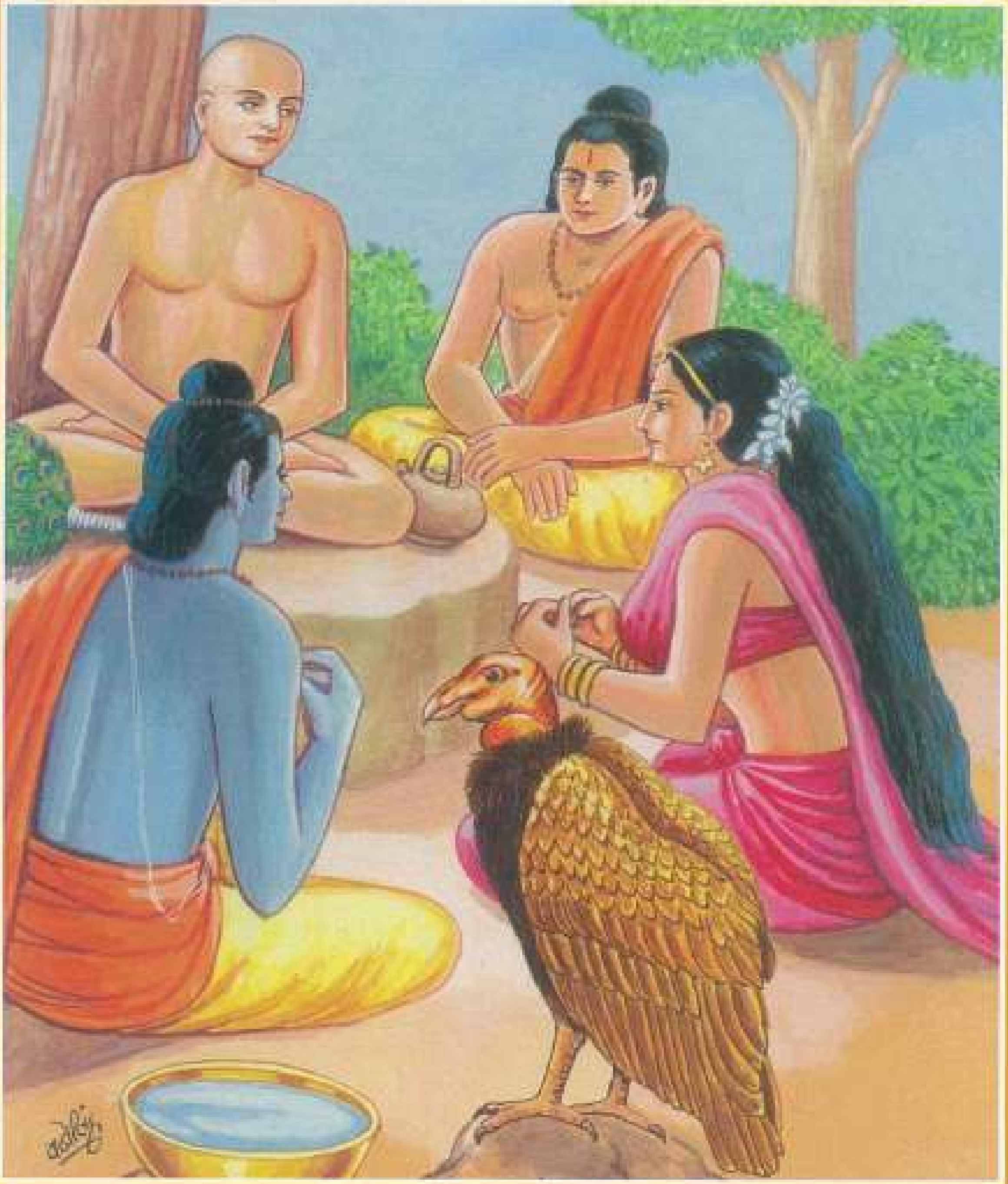

सम्पादकीय

शीलाधर्म की ध्वजा से चिन्हित, वात्सल्य, श्रद्धा, लज्जा, चिन्ता, अनुराग और त्याग की मूर्ति नारी दूसरों के सुखों के लिए स्वयं दुःख रुपी हिण्डौलों पर झूलती रहती है। केवल इतना ही नही, अपितु ममतामयी मातृत्व निधि को लुटा-लुटा कर बदले में तिरस्कार एवं अवहेलना प्राप्त करके भी संतुष्ट रहती है।

महासती को देखिए उनका जीवन जनक नन्दिनी के जन्म लेते ही भाई भामण्डल का अपहरण हुआ, विवाह के कुछ समय बाद ही पति एवं देवर लक्ष्मण के साथ वन गमन करना पड़ा, उसी अवधी में रावण द्वारा अपहरण, गर्भवती सीता का पति राम द्वारा परित्याग, सेनापति द्वारा एकाकी छोड़े जाने पर सन्तप्त हुई सीता विलाप तो अवश्य करने लगी, परन्तु इस धर्मनिष्ठा ने संकट की उस बेला में भी अपने विवेक को जागृत रख पति के लिए उद्‌बोधन देने वाला संदेश भेजा, कि हे प्राणनाथ अपवाद के भय से जैसे मुझे त्याग दिया है वैसे ही कभी धर्म का परित्याग मत कर देना।

अपवाद के मानसिक ताप से सन्तप्त सीता का भाई वज्रजंघ के यहाँ निवास, लव-कुश का जन्म, पिता पुत्र का युद्ध पुनः पिता पुत्र का मिलन तथा सीता के व्यक्तिव को कंचन सा निखारने वाला, अग्नि परीक्षा आदि घटनाओं से भरा सारा जीवन तपश्चर्या से युक्त है वह पठनीय, मननीय और अनुकरणीय हैं। जिसका नाम युगों - युगों तक स्मरण किया जावेगा।

ब्रं डॉ. रेखा जैन
अष्टापद तीर्थ जैन मंदिर

जैन चित्र कथा

सुनो सुनायें सत्य कथाऐं

प्रकाशक	-	आचार्य धर्मश्रुत ग्रन्थमाला एवं भा. अनेकान्त विद्वत परिषद
निर्देशक	-	ब्रं धर्मचंद शास्त्री
कृति	-	जनक नन्दिनी सीता
सम्पादक	-	ब्रं रेखा जैन एम. ए. अष्टापद तीर्थ
पुष्प नं.	-	56
मूल्य	-	25/- रुपये
चित्रकार	-	बने सिंह राठौड़
प्राप्ति स्थान	-	1. अष्टापद तीर्थ जैन मन्दिर 2. जैन मन्दिर गुलाब वाटिका

© सर्वाधिकार सुरक्षित

अष्टापद तीर्थ जैन मन्दिर
विलासपुर चौक,
दिल्ली-जयपुर N.H. 8,
गुड़गाँव, हरियाणा
फोन : 09466776611
09312837240

जनक नन्दनी सीता

विदेहराज महाराज जनक जिनकी महारानी विदेहा के जब गर्भ रहा तो एक देव के अभिलाषा हुई कि ....
अगर इनके बालक हुआ तो मैं ले जाऊं
समय पाकर महारानी विदेहा के पुत्र और पुत्री युगल का जन्म हुआ। तो उस देव ने पुत्र का हरण कर लिया। बालक को आभूषण, कुण्डल पहनाये परण लब्धी नामक विद्याधर ने उसे आकाश और पृथ्वी के बीच ठहराया और अपने धाम गया
चित्रांकन - बनेसिंह
मो. 9480634276
रात्रि के समय चन्द्रगति नामके विद्याधर ने आभूषणो से प्रकाशमान बालक को देखा। वह हर्षित होकर बालक को उठा लाया। अपनी रानी पुष्पवती के गोद में रख दिया और कहा–
तुम्हारे बालक हुआ है।

अद्भुत बालक को पाकर रानी बहुत प्रसन्न हुई। दूसरे दिन राजा ने पुत्र जन्म का उत्सव मनाया। रत्न के कुण्डल की किरणों से मण्डित पुत्र बालक प्रभामण्डल का माता-पिता द्वारा राजसी ठाट बाट से पालन पोषण होने लगा।
उधर मिथिलापुरी में राजा जनक की रानी विदेहा पुत्र का हरण जान विलाप करने लगी। अत्यन्त ऊंचे स्वर में रूदन किया। समस्त परिवार में शोक व्याप्त हो गया।
तब महाराज जनक आये, रानी को धैर्य बंधाते हुए बोले-
हे प्रिये, तुम शोक मत करो। तुम्हारा पुत्र जीवित है। किसी ने हरण किया है। तुम निश्चित रूप से उसे देखोगी।
प्रभा मण्डल के गये का शोक भुलाने के लिए महामनोहर जानकी की बाललीला से सब बन्धु लोगों ने आनन्द उत्पन्न होने लगा। अत्यन्त हर्षित होकर, महल की स्त्रियां उसे गोद में खिलाती। अपने शरीर की कान्ति से दशों दिशाओं को प्रकाशित करती हुई वृद्धि को प्राप्त हुई।
कमल की कली से नेत्र, महा सुकंठ, प्रसन्न बदन मानो साक्षात, श्रीदेवी ही आई है। सर्वगुण सम्पन्न, समस्त लोक सुख दाता, अत्यन्त मनोहर सुन्दर लक्षण संयुक्त, भूमि के समान क्षमा की धारणहारी इसलिए जगत में सीता नाम से प्रसिद्ध हुई।

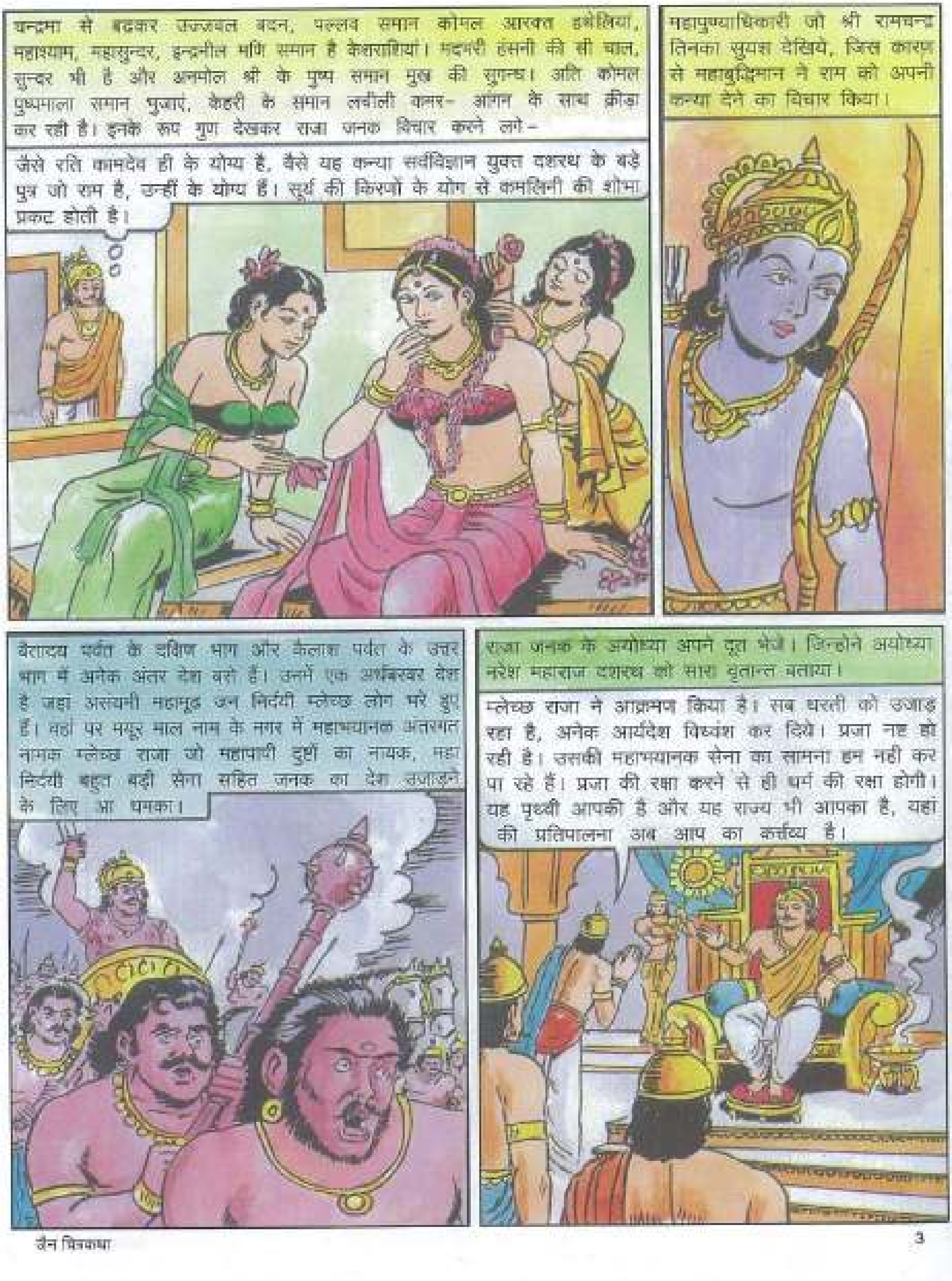
चन्द्रमा से बढ़कर उज्ज्वल बदन, पल्लव समान कोमल आरक्त हथेलियां, महाश्याम, महासुन्दर, इन्द्रनील मणि समान है केशराशियां। मदभरी हंसनी की सी चाल, सुन्दर भी है और अनमोल श्री के पुष्प समान मुख की सुगन्ध। अति कोमल पुष्पमाला समान भुजाएं, केहरी के समान लचीली कमर- आंगन के साथ क्रीड़ा कर रही है। इनके रूप गुण देखकर राजा जनक विचार करने लगे-
जैसे रति कामदेव ही के योग्य है, वैसे यह कन्या सर्वविज्ञान युक्त दशरथ के बड़े पुत्र जो राम है, उन्हीं के योग्य है। सूर्य की किरणों के योग से कमलिनी की शोभा प्रकट होती है।
महापुण्याधिकारी जो श्री रामचन्द्र तिनका सुयश देखिये, जिस कारण से महाबुद्धिमान ने राम को अपनी कन्या देने का विचार किया।
वैताढ्य पर्वत के दक्षिण भाग और कैलाश पर्वत के उत्तर भाग में अनेक अंतर देश बसे हैं। उनमें एक अर्धबर्बर देश है जहां असंयमी महामूढ़ जन निर्दयी म्लेच्छ लोग भरे हुए हैं। वहां पर मयूर माल नाम के नगर में महाभयानक अंतरगत नामक म्लेच्छ राजा जो महापापी दुष्टों का नायक, महा निर्दयी बहुत बड़ी सेना सहित जनक का देश उजाड़ने के लिए आ धमका।
राजा जनक ने अयोध्या अपने दूत भेजे। जिन्होंने अयोध्या नरेश महाराज दशरथ को सारा वृतान्त बताया।
म्लेच्छ राजा ने आक्रमण किया है। सब धरती को उजाड़ रहा है, अनेक आर्यदेश विध्वंश कर दिये। प्रजा नष्ट हो रही है। उसकी महाभयानक सेना का सामना हम नहीं कर पा रहे हैं। प्रजा की रक्षा करने से ही धर्म की रक्षा होगी। यह पृथ्वी आपकी है और यह राज्य भी आपका है, यहां की प्रतिपालना अब आप का कर्त्तव्य है।

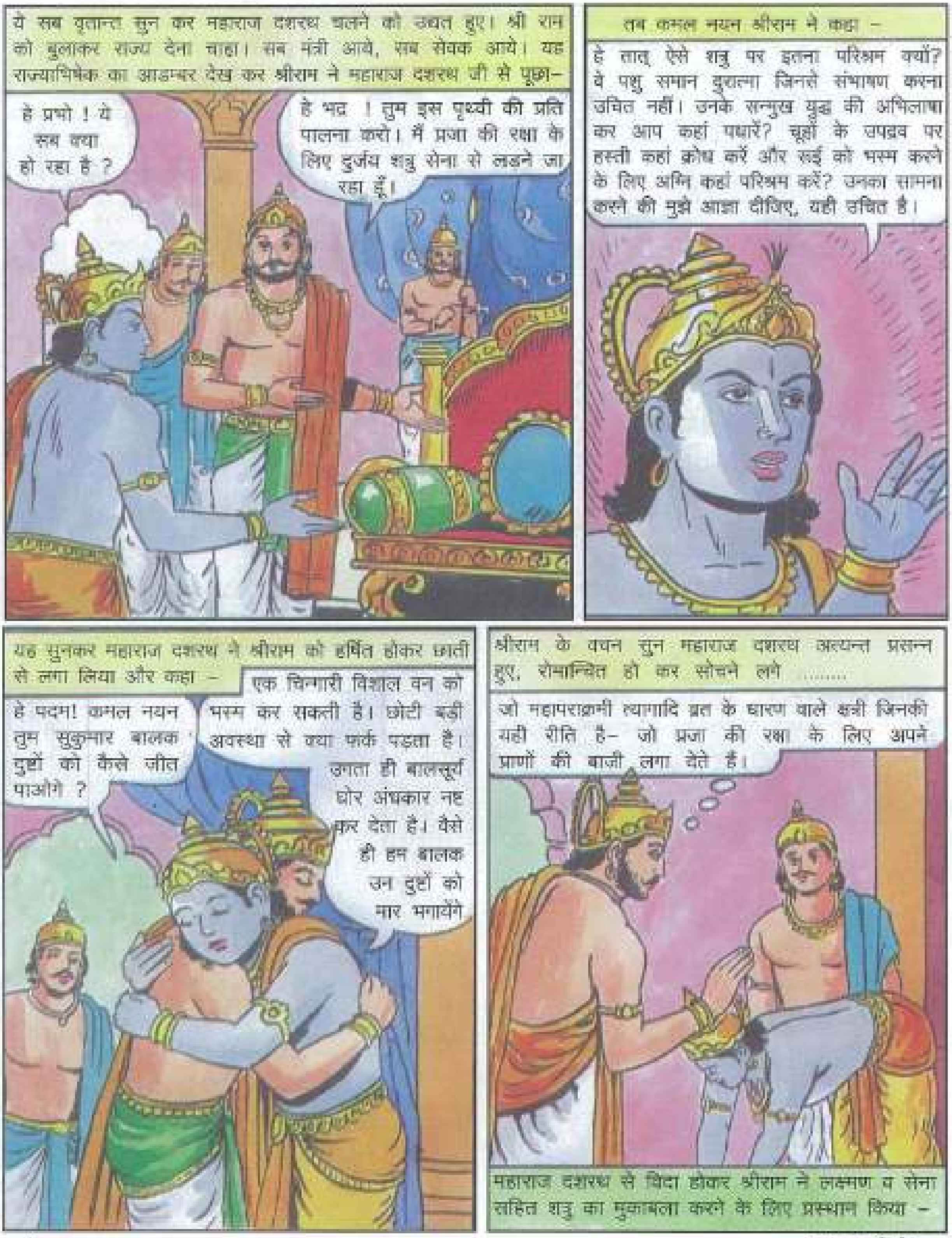
ये सब वृतान्त सुन कर महाराज दशरथ चलने को उद्यत हुए। श्री राम को बुलाकर राज्य देना चाहा। सब मंत्री आये, सब सेवक आये। यह राज्याभिषेक का आडम्बर देख कर श्रीराम ने महाराज दशरथ जी से पूछा–
हे प्रभो ! ये सब क्या हो रहा है ?
हे भद्र ! तुम इस पृथ्वी की प्रतिपालना करो। मैं प्रजा की रक्षा के लिए दुर्जय शत्रु सेना से लड़ने जा रहा हूँ।
तब कमल नयन श्रीराम ने कहा –
हे तात् ऐसे शत्रु पर इतना परिश्रम क्यों? वे पशु समान दुरात्मा जिनसे संभाषण करना उचित नहीं। उनके सन्मुख युद्ध की अभिलाषा कर आप कहां पधारें? चूहों के उपद्रव पर हस्ती कहां क्रोध करें और रुई को भस्म करने के लिए अग्नि कहां परिश्रम करें? उनका सामना करने की मुझे आज्ञा दीजिए, यही उचित है।
यह सुनकर महाराज दशरथ ने श्रीराम को हर्षित होकर छाती से लगा लिया और कहा –
हे पदम! कमल नयन तुम सुकुमार बालक दुष्टों को कैसे जीत पाओगे ?
एक चिन्गारी विशाल वन को भस्म कर सकती है। छोटी बड़ी अवस्था से क्या फर्क पड़ता है। उगता ही बालसूर्य घोर अंधकार नष्ट कर देता है। वैसे ही हम बालक उन दुष्टों को मार भगायेंगे
श्रीराम के वचन सुन महाराज दशरथ अत्यन्त प्रसन्न हुए, रोमान्चित हो कर सोचने लगे ....
जो महापराक्रमी त्यागादि व्रत के धारण वाले क्षत्री जिनकी यही रीति है– जो प्रजा की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा देते हैं।
महाराज दशरथ से विदा होकर श्रीराम ने लक्ष्मण व सेना सहित शत्रु का मुकाबला करने के लिए प्रस्थान किया –

सब शास्त्र व शस्त्र विद्या में प्रवीण, सर्व लक्षण निपुण, सर्व प्रिय श्रीराम चतुरंग सेना के साथ अपने देदीप्यमान रथ पर दोनो भाई आरूढ़ हो राजा जनक की मदद के लिए चले। उधर से राजा जनक व कनक दोनो भाई सेना सहित आ डटे म्लेच्छों और सामन्तों के बीच भयंकर युद्ध छिड़ गया। महाराज जनक व कनक बर्बर देश के म्लेच्छों की सेना के बीच घिर गये थे। उसी समय श्रीराम और लक्ष्मण पहुंच गये।

पृथ्वी के रक्षक, धीर वीर श्रीराम शत्रु की विशाल सेना में प्रवेश कर गये – जैसे मदमस्त हाथी कदली वन को नष्ट करता है वैसे शत्रु सेना का विध्वंस करने लगे। राजा जनक व कनक दोनो भाईयों को बचा लिया –

लक्ष्मण की बाणवर्षा के सामने सारी शत्रु सेना छिन्न–भिन्न हो गयी। असंख्य सैनिक धराशायी हो गये। जो बचे जान बचा कर भाग गये। तब उनका अधिपति आतरंग सामना करने आया। महाभयंकर युद्ध किया, उसने लक्ष्मण का रथ तोड़ दिया। तब पवन वेग से श्रीराम ने लक्ष्मण के समीप आकर दूसरे रथ पर लक्ष्मण को चढ़ाया और स्वयं शत्रु सेना पर टूट पड़े। अग्नि जैसे वन को भस्म करती है वैसे ही शत्रु की अपार सेना को बाणों से नष्ट कर दिया। बची सेना हथियार डालकर भाग गयी।

लक्ष्मण सहित श्रीराम ने राजा जनक को प्रसन्न कर विदा किया और स्वयं अपनी राजधानी को प्रस्थान किया।

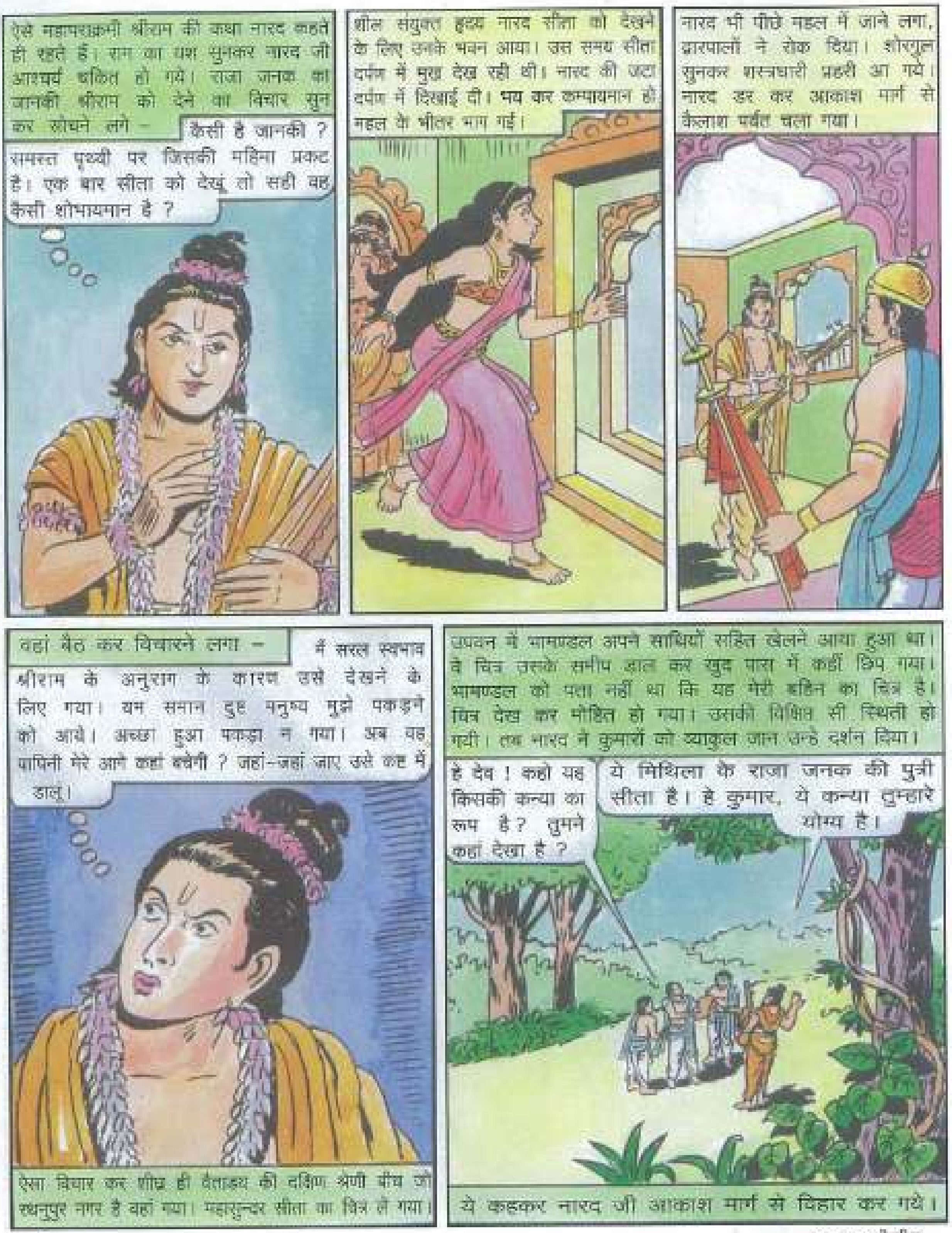
ऐसे महापराक्रमी श्रीराम की कथा नारद कहते ही रहते हैं। राम का यश सुनकर नारद जी आश्चर्य चकित हो गये। राजा जनक का जानकी श्रीराम को देने का विचार सुन कर सोचने लगे –
कैसी है जानकी ?
समस्त पृथ्वी पर जिसकी महिमा प्रकट है। एक बार सीता को देखूं तो सही वह कैसी शोभायमान है ?
शील संयुक्त हृदय नारद सीता को देखने के लिए उनके भवन आया। उस समय सीता दर्पण में मुख देख रही थी। नारद की जटा दर्पण में दिखाई दी। भय कर कम्पायमान हो महल के भीतर भाग गई।
नारद भी पीछे महल में जाने लगा, द्वारपालों ने रोक दिया। शोरगुल सुनकर शस्त्रधारी प्रहरी आ गये। नारद डर कर आकाश मार्ग से कैलाश पर्वत चला गया।
वहां बैठ कर विचारने लगा –
मैं सरल स्वभाव श्रीराम के अनुराग के कारण उसे देखने के लिए गया। यम समान दुष्ट मनुष्य मुझे पकड़ने को आये। अच्छा हुआ पकड़ा न गया। अब वह पापिनी मेरे आगे कहां बचेगी ? जहां-जहां जाए उसे कष्ट में डालूं।
ऐसा विचार कर शीघ्र ही वैताढ्य की दक्षिण श्रेणी बीच जो रथनुपुर नगर है वहां गया। महासुन्दर सीता का चित्र ले गया।
उपवन में भामण्डल अपने साथियों सहित खेलने आया हुआ था। वे चित्र उसके समीप डाल कर खुद पास में कहीं छिप गया। भामण्डल को पता नहीं था कि यह मेरी बहिन का चित्र है। चित्र देख कर मोहित हो गया। उसकी विक्षिप्त सी स्थिती हो गयी। तब नारद ने कुमारों को व्याकुल जान उन्हे दर्शन दिया।
हे देव ! कहो यह किसकी कन्या का रूप है? तुमने कहां देखा है ?
ये मिथिला के राजा जनक की पुत्री सीता है। हे कुमार, ये कन्या तुम्हारे योग्य है।
ये कहकर नारद जी आकाश मार्ग से विहार कर गये।

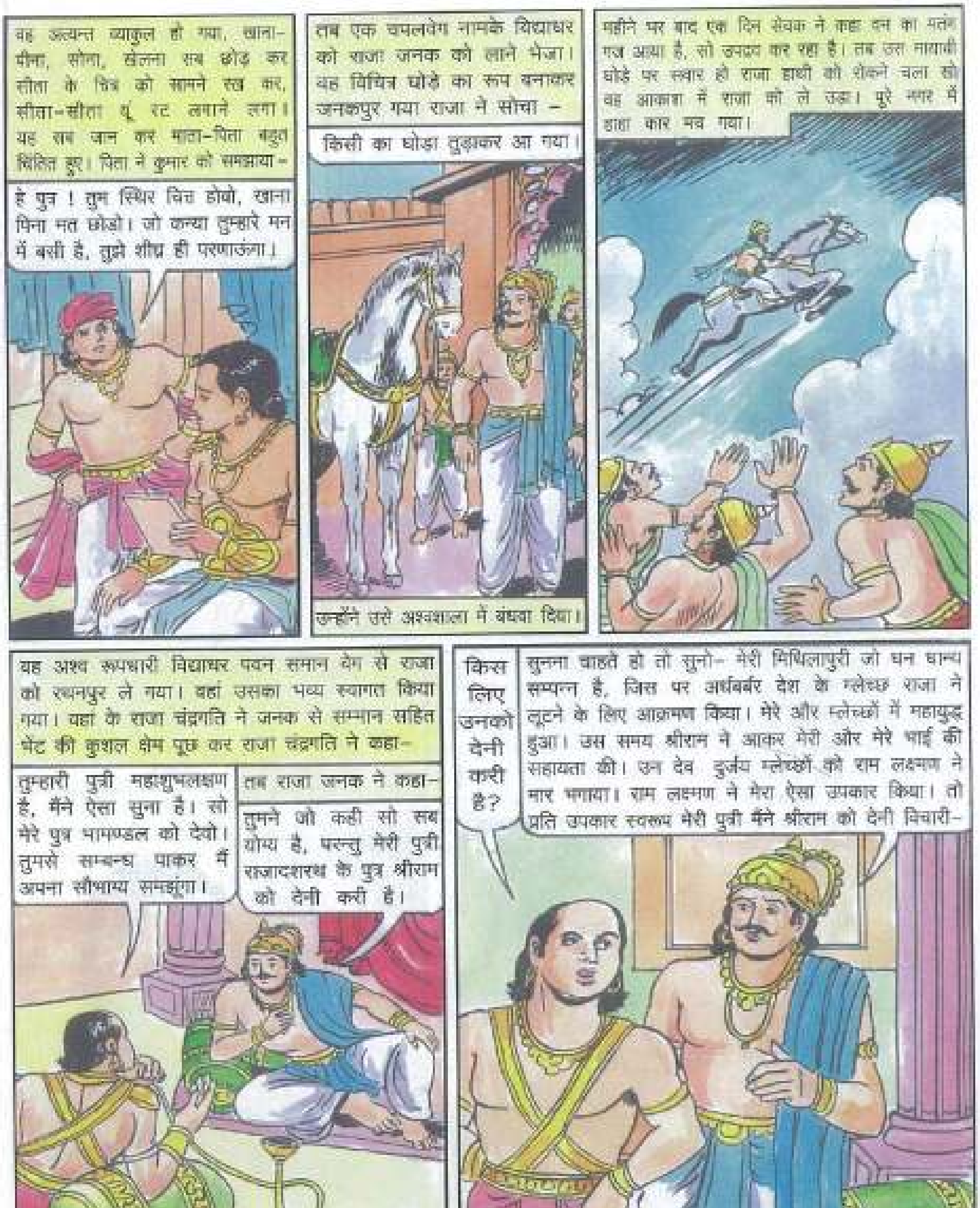
वह अत्यन्त व्याकुल हो गया, खाना-पीना, सोना, खेलना सब छोड़ कर सीता के चित्र को सामने रख कर, सीता-सीता यूं रट लगाने लगा। यह सब जान कर माता-पिता बहुत चिंतित हुए। पिता ने कुमार को समझाया-
हे पुत्र ! तुम स्थिर चित्त होवो, खाना पिना मत छोडो। जो कन्या तुम्हारे मन में बसी है, तुझे शीघ्र ही परणाऊंगा।
तब एक चपलवेग नामके विद्याधर को राजा जनक को लाने भेजा। वह विचित्र घोड़े का रुप बनाकर जनकपुर गया राजा ने सोचा -
किसी का घोड़ा तुड़ाकर आ गया।
उन्होंने उसे अश्वशाला में बंधवा दिया।
महीने भर बाद एक दिन सेवक ने कहा वन का मतंग गज आया है, सो उपद्रव कर रहा है। तब उस मायावी घोड़े पर स्वार हो राजा हाथी को रोकने चला सो वह आकाश में राजा को ले उड़ा। पूरे नगर में हाहा कार मच गया।
यह अश्व रूपधारी विद्याधर पवन समान वेग से राजा को रथनपुर ले गया। वहां उसका भव्य स्वागत किया गया। वहा के राजा चंद्रगति ने जनक से सम्मान सहित भेंट की कुशल क्षेम पूछ कर राजा चंद्रगति ने कहा-
तुम्हारी पुत्री महाशुभलक्षण है, मैंने ऐसा सुना है। सो मेरे पुत्र भामण्डल को देवो। तुमसे सम्बन्ध पाकर मैं अपना सौभाग्य समझूंगा।
तब राजा जनक ने कहा-
तुमने जो कही सो सब योग्य है, परन्तु मेरी पुत्री राजादशरथ के पुत्र श्रीराम को देनी करी है।
किस लिए उनको देनी करी है?
सुनना चाहते हो तो सुनो- मेरी मिथिलापुरी जो धन धान्य सम्पन्न है, जिस पर अर्धबर्बर देश के म्लेच्छ राजा ने लूटने के लिए आक्रमण किया। मेरे और म्लेच्छों में महायुद्ध हुआ। उस समय श्रीराम ने आकर मेरी और मेरे भाई की सहायता की। उन देव दुर्जय म्लेच्छों को राम लक्ष्मण ने मार भगाया। राम लक्ष्मण ने मेरा ऐसा उपकार किया। तो प्रति उपकार स्वरूप मेरी पुत्री मैंने श्रीराम को देनी विचारी-

कहाँ वे रंक म्लेच्छ और कहाँ उनके जीतने की बड़ाई? इसमें राम का कौन सा पराक्रम है। जिनकी इतनी बड़ाई कर रहे हो। तुम्हारी बात सुन हंसी आती है, जैसे बालक को विषफल भी अमृत लगता है। दरिद्र को बेर भी अच्छे लगते हैं। कौवों को सूखे पेड़ भी अच्छे लगते हैं। यह स्वभाव ही है। अब तुम उनका खोटा सम्बंध तजकर विद्याधरों के राजा चंद्रगति से सम्बंध करो।
राजा दशरथ के बड़े पुत्र श्रीराम जिन्हें पद्म कहिए। दीप्ति और कीर्ति जिनकी सूर्य और चन्द्रमा से बढ़कर है। जिनका छोटा भाई लक्ष्मण जिनके धनुष की टंकार सुनकर शत्रु थर-थर कांपने लगते हैं। तुम विद्याधरों को उनसे अधिक बताते हो, कौवे भी आकाश में उड़ते हैं, उनमें क्या गुण है? भूमिगोचरियों में भगवान तीर्थंकर उपजे हैं, उन्हें इन्द्रादिक देव भूमि पर मस्तक टेक कर नमस्कार करते हैं। विद्याधरों की क्या बात है?
हे भूमिगोचरियों के नाथ। तुम राम लक्ष्मण का इतना प्रभाव बता रहे हो। बेकार बड़ी-बड़ी बातें कर रहे हो। तुम्हें हमारे बल पराक्रम का पता नहीं है, इसलिए हम कह रहे हैं सुनो- एक वज्रावर्त, दूसरा सागरावर्त ये दो धनुष, ये दोनो भाई चढ़ावें तो हम उनकी शक्ति मान लें अन्यथा हम बल पूर्वक कन्या को यहां ले आवेंगे। तुम देखते रहोगे।
यह बात प्रमाण है।
तब राजा जनक ने मिथिलापुरी आकर आयुधशाला में वे धनुष स्थापित किये- राजा उदास रहने लगे, रानी के पूछने पर बताया-
यह मायावी घोड़ा मुझे विजयार्ध गिरी में ले गया। वहां रथनुपुर के राजा चंद्रगति से मेरा मिलना हुआ। उन्होने कहा तुम्हारी पुत्री मेरे पुत्र को देदो। मैंने कहा मैं तो दशरथ पुत्र श्रीराम को देनी कर चुका हूँ। तब वाने कही जो रामचंद्र वज्रावर्त धनुष को चढ़ावे तो तुम्हारी पुत्रि परणे अन्यथा मेरा पुत्र परणेगा।
परवश होकर मैंने यह बात प्रमाण करदी। वो दोनों धनुष यहां लाये हैं, बाहर आयुधशाला में रखे हैं। ये धनुष इन्द्र से भी न चढ़ाये जाये। कदाचित श्रीराम धनुष को नहीं चढ़ापायें तो विद्याधर मेरी पुत्री को बलपूर्वक ले जावेंगे।

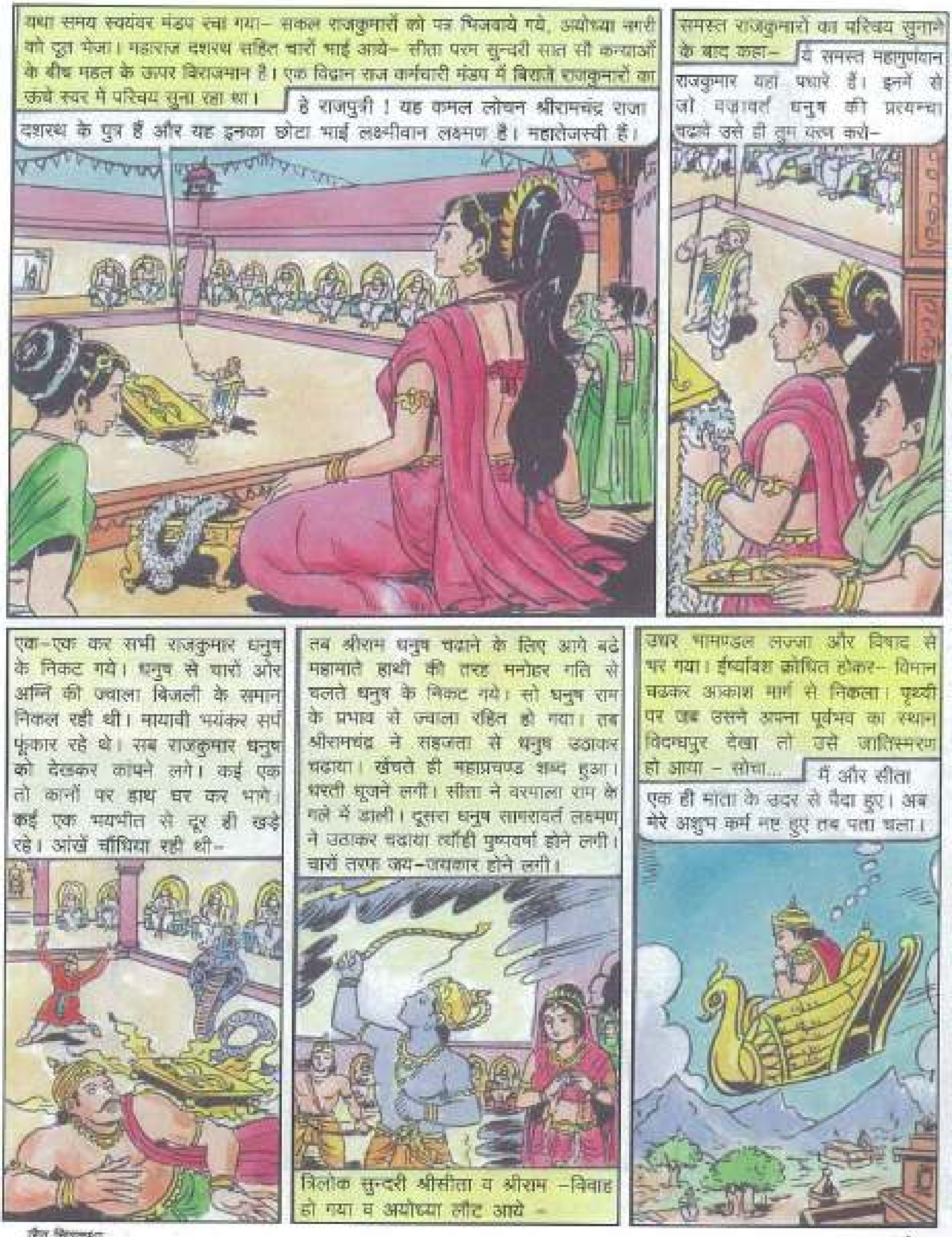
यथा समय स्वयंवर मंडप रचा गया– सकल राजकुमारों को पत्र भिजवाये गये, अयोध्या नगरी को दूत भेजा। महाराज दशरथ सहित चारों भाई आये– सीता परम सुन्दरी सात सौ कन्याओं के बीच महल के ऊपर विराजमान है। एक विद्वान राज कर्मचारी मंडप में विराजे राजकुमारों का ऊंचे स्वर में परिचय सुना रहा था।
हे राजपुत्री ! यह कमल लोचन श्रीरामचंद्र राजा दशरथ के पुत्र हैं और यह इनका छोटा भाई लक्ष्मीवान लक्ष्मण है। महातेजस्वी हैं।
समस्त राजकुमारों का परिचय सुनाने के बाद कहा–
ये समस्त महागुणवान राजकुमार यहां पधारे हैं। इनमें से जो वज्रावर्त धनुष की प्रत्यन्चा चढ़ावे उसे ही तुम वरण करो–
एक-एक कर सभी राजकुमार धनुष के निकट गये। धनुष से चारों ओर अग्नि की ज्वाला बिजली के समान निकल रही थी। मायावी भयंकर सर्प फूंकार रहे थे। सब राजकुमार धनुष को देखकर कांपने लगे। कई एक तो कानों पर हाथ धर कर भागे। कई एक भयभीत से दूर ही खड़े रहे। आंखें चौंधिया रही थी–
तब श्रीराम धनुष चढ़ाने के लिए आगे बढ़े महामाते हाथी की तरह मनोहर गति से चलते धनुष के निकट गये। सो धनुष राम के प्रभाव से ज्वाला रहित हो गया। तब श्रीरामचंद्र ने सहजता से धनुष उठाकर चढ़ाया। खेंचते ही महाप्रचण्ड शब्द हुआ। धरती धूजने लगी। सीता ने वरमाला राम के गले में डाली। दूसरा धनुष सागरावर्त लक्ष्मण ने उठाकर चढ़ाया त्योंही पुष्पवर्षा होने लगी। चारों तरफ जय-जयकार होने लगी।
त्रिलोक सुन्दरी श्रीसीता व श्रीराम –विवाह हो गया व अयोध्या लौट आये –
उधर भामण्डल लज्जा और विषाद से भर गया। ईर्ष्यावश क्रोधित होकर– विमान चढ़कर आकाश मार्ग से निकला। पृथ्वी पर जब उसने अपना पूर्वभव का स्थान विदग्धपुर देखा तो उसे जातिस्मरण हो आया – सोचा...
मैं और सीता एक ही माता के उदर से पैदा हुए। अब मेरे अशुभ कर्म नष्ट हुए तब पता चला।

यह अयोध्या पहुंचा वहां सीता अपने भाई भामण्डल को देख हर्षित होकर मिली।
हे भाई ! मैंने तुम्हें प्रथम बार ही देखा है।
श्रीराम लक्ष्मण भी भामण्डल से मिले। समाचार पाकर राजा जनक भी सपरिवार आये। सर्वत्र आनन्द उत्सव मनाया गया।

कुछ समय बाद महाराज दशरथ को सर्वभूतहित मुनिराज के उपदेश से वैराग्य उत्पन्न हो गया, उन्होंने श्रीराम को योग्य समझ कर राज्यतिलक करना चाहा परन्तु रानी कैकई के वचन से भरत को राज्य दिया। श्रीराम पिता की आज्ञा लेकर वन को चले तब लक्ष्मण व सीता ने श्रीराम के साथ वन में प्रस्थान किया-

माता की आज्ञा लेकर भरत राम-सीता व लक्ष्मण को वन से वापस लाने वन में गये। श्रीराम के चरणों में लिपट कर निवेदन किया।
हे प्रभो! मुझ पर कृपा करो। ये राज्य आप करो। मैं आप के सिर पर छत्र लगाऊंगा। शत्रुघ्न चंवर ढारेगा और लक्ष्मण मंत्री पद धारेगा। मेरी माता पश्चाताप रूपी अग्नि से जल रही है। आपकी माता और लक्ष्मण की माता महाशोक में डूबी हुई हैं।
हे भाई! तुम चिन्ता मत करो पिता की आज्ञा पालन तुम्हारा हमारा सबका परम कर्तव्य है।
भरत को हृदय से लगाकर, बहुत दिलासा देकर बड़ी मुश्किल से अयोध्या भेजा-

तदन्तर श्रीरामचंद्र, लक्ष्मण, सीता एक तपस्वी के आश्रम में गये- उन तपस्वियों ने नाना प्रकार के मधुर फल सुगन्धित पुष्प व मीठा जल आदर सहित भेण्ट किये। रात्रि विश्राम कर प्रभात होते ही उठकर आगे चलने लगे- तब अनेक तपस्वी उनके साथ चलने लगे।
हम आगे जो निर्जन वन बता रहे हो, वहीं जावेंगे, आप लोग वापस लौट जावो।

चित्रकूट पर्वत के पास कुटिया बनाकर रहने लगे। नाना प्रकार की कथा करते हास्य विनोद करते- जैसे नन्दन वन में देव भ्रमण करते हैं वैसे ही अतिरमणीक लीला पूर्वक वन विहार करते रहे।

इसके बाद चारमास में मालव देश में आये, जहां कोई बस्ती नहीं दिखाई दी तो एक वट वृक्ष की छाया मे विश्राम करने लगे तभी एक वृद्ध पथिक उधर से निकला। श्रीराम ने उससे पूछा-
ये इतना सुन्दर प्रदेश निर्जन कैसे हो रहा है?
इस उज्जयनी नगरी के राजा सिंहोदरा हैं। उसका सेवक वज्रकर्ण जिसने मुनिराज उपदेश से प्रभावित हो प्रण कर लिया कि मैं देवगुरु शास्त्र को छोड़कर किसी को नमस्कार नहीं करूंगा। इसका पता लगने पर सिंहोदरा ने उसके नगर व प्रदेश को उजाड़ दिया है।

तब श्रीराम नगर के निकट पहुंच कर एक चन्द्रप्रभु चैत्यालय में ठहरे व लक्ष्मण को नगरी में राजा सिंहोदर के पास भेजा लक्ष्मण सिंहोदर को डरा धमका कर श्रीराम सीता के पास चैत्यालय में ले आया। तब सिंहोदर हाथ जोड़कर कांपता हुआ श्रीराम सीता के पैरों में पड़ा और बोला-
हे देव! आप महाकान्ति के धारी, परम तेजस्वी हो, सुमेरु जैसे अचल पुरुषोत्तम हो, मैं आपका आज्ञाकारी हूँ। ये राज्य आपका है। आप चाहो जैसा करो। मैं आप के चरणों की नित्य सेवा करूंगा।
हे देवी! हे शोभने! आप स्त्री शिरोमणी हो, हमारे पर करुणा करो, मेरे पति के लिए आपसे भिक्षा मांगती हूँ।

तब श्रीराम ने मेघगर्जनी की तरह गंभीर वाणी में कहा।
अहो सिंहोदर ! तुम्हे जो वज्रकर्ण कहे वैसा करो।
जो आज्ञा!
इस तरह वज्रकर्ण को सिंहोदर से निर्भय किया और मित्रता की।

तदन्तर ये दोनों वीर महाधीर सीता सहित नाना प्रकार के वृक्षों, भान्ति-भान्ति के पुष्पों से युक्त वन में रमते-रमते आए, समस्त देवोपुनीत शरीरधारी। पुष्पों के कर्णाभूषण धारण किये। कहीं छोटे वृक्ष में लगी बेल का हिंडोला बना कर दोनों भाई झोटा देय-देय कर जानकी को झुलाते हैं, और आनन्द की कथा कहकर विनोद उपजाते हैं।

अनेक देशों को देखते हुए वंशस्थल नगर कुन्थलगिरी आये। नगर के निकट एक वंशधर नामका पर्वत देखा- मानो पृथ्वी को भेद कर निकला हो। जहां बांसों के बड़े समूह जिनसे दिन में भी सूर्य नहीं दिखता था। लोग नगर को छोड़ कर जा रहे थे। पहाड़ों के शिखर पर ऐसी ध्वनि हो रही थी जो अब तक नहीं सुनी। दशों दिशाएं गूंजने लगती हैं। राम, लक्ष्मण, सीता वहां पहाड़ पर गये। शिखर पर देखते हैं, देशभूषण और कुलभूषण दो मुनि कायोत्सर्ग मुद्रा में खड़े हैं। राम, लक्ष्मण, व सीता ने उन्हें नमस्कार किया- महाभक्तियुक्त दोनों भाई मुनियों के समीप बैठे। उसी समय असुर के आने से महाभयानक शब्द हुआ। मायावी सर्प बिच्छु दोनों मुनियों पर झपट पड़े।

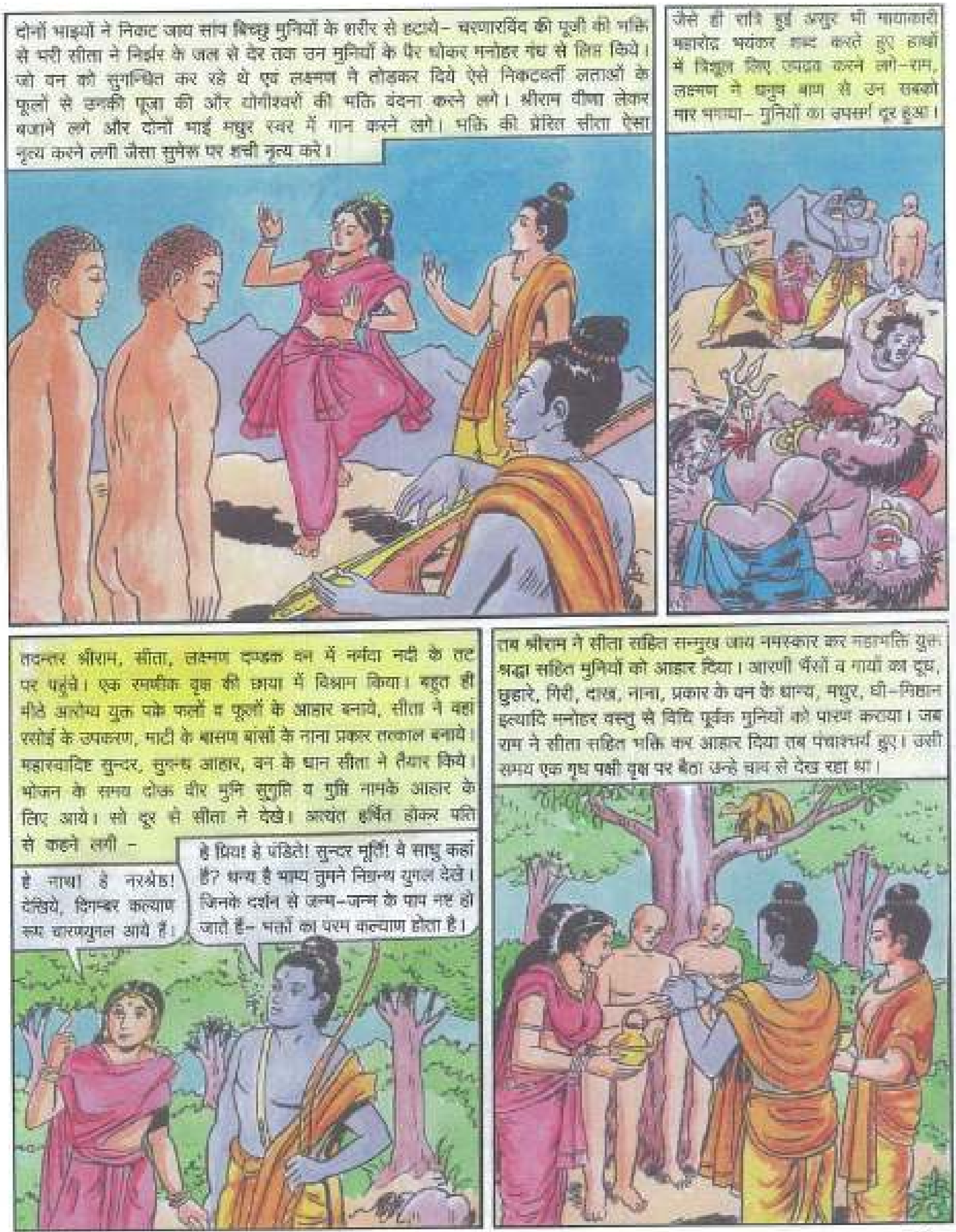
दोनों भाइयों ने निकट जाय सांप बिच्छु मुनियों के शरीर से हटाये– चरणारविंद की पूजी की भक्ति से भरी सीता ने निर्झर के जल से देर तक उन मुनियों के पैर धोकर मनोहर गंध से लिप्त किये। जो वन को सुगन्धित कर रहे थे एवं लक्ष्मण ने तोड़कर दिये ऐसे निकटवर्ती लताओं के फूलों से उनकी पूजा की और योगीश्वरों की भक्ति वंदना करने लगे। श्रीराम वीणा लेकर बजाने लगे और दोनों भाई मधुर स्वर में गान करने लगे। भक्ति की प्रेरित सीता ऐसा नृत्य करने लगी जैसा सुमेरु पर शची नृत्य करे।
जैसे ही रात्रि हुई असुर भी मायाकारी महारौद्र भयंकर शब्द करते हुए हाथों में त्रिशूल लिए उपद्रव करने लगे–राम, लक्ष्मण ने धनुष बाण से उन सबको मार भगाया– मुनियों का उपसर्ग दूर हुआ।
तदन्तर श्रीराम, सीता, लक्ष्मण दण्डक वन में नर्मदा नदी के तट पर पहुंचे। एक रमणीक वृक्ष की छाया में विश्राम किया। बहुत ही मीठे आरोग्य युक्त पके फलों व फूलों के आहार बनाये, सीता ने वहां रसोई के उपकरण, माटी के बासण बांसों के नाना प्रकार तत्काल बनाये। महास्वादिष्ट सुन्दर, सुगन्ध आहार, वन के धान सीता ने तैयार किये। भोजन के समय दोऊ वीर मुनि सुगुप्ति व गुप्ति नामके आहार के लिए आये। सो दूर से सीता ने देखे। अत्यंत हर्षित होकर पति से कहने लगी –
हे नाथ! हे नरश्रेष्ठ! देखिये, दिगम्बर कल्याण रूप चारणयुगल आये हैं।
हे प्रिये! हे पंडिते! सुन्दर मूर्ति! ये साधु कहां हैं? धन्य है भाग्य तुमने निग्रन्थ युगल देखे। जिनके दर्शन से जन्म–जन्म के पाप नष्ट हो जाते हैं– भक्तों का परम कल्याण होता है।
तब श्रीराम ने सीता सहित सन्मुख जाय नमस्कार कर महाभक्ति युक्त श्रद्धा सहित मुनियों को आहार दिया। आरणी भैंसों व गायों का दूध, छुहारे, गिरी, दाख, नाना, प्रकार के वन के धान्य, मधुर, घी–मिष्ठान इत्यादि मनोहर वस्तु से विधि पूर्वक मुनियों को पारणा कराया। जब राम ने सीता सहित भक्ति कर आहार दिया तब पंचाश्चर्य हुए। उसी समय एक गृध पक्षी वृक्ष पर बैठा उन्हे चाव से देख रहा था।

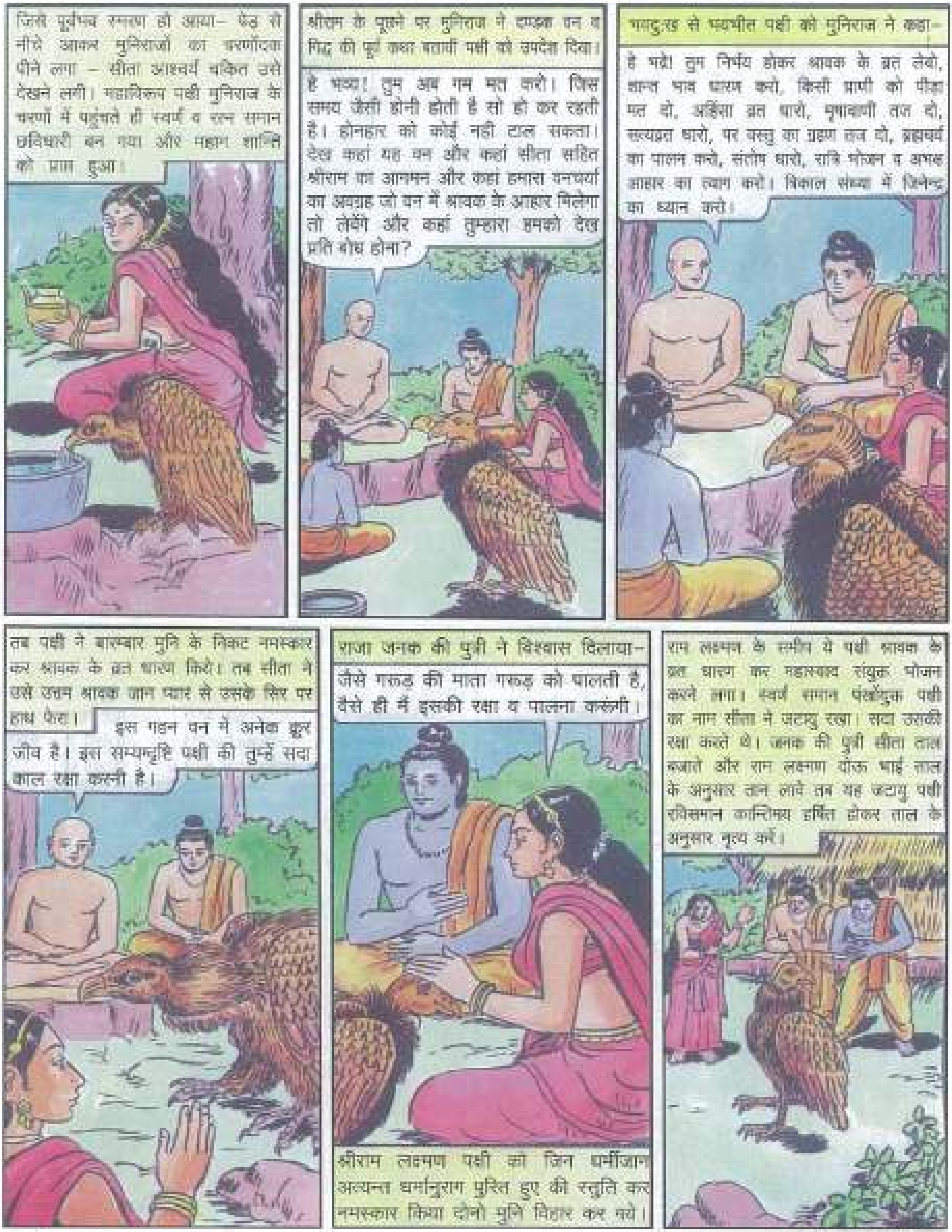
जिसे पूर्वभव स्मरण हो आया– पेड़ से नीचे आकर मुनिराजों का चरणोंदक पीने लगा – सीता आश्चर्य चकित उसे देखने लगी। महाविरूप पक्षी मुनिराज के चरणों में पहुंचते ही स्वर्ण व रत्न समान छविधारी बन गया और महान शान्ति को प्राप्त हुआ।
श्रीराम के पूछने पर मुनिराज ने दण्डक वन व गिद्ध की पूर्व कथा बतायी पक्षी को उपदेश दिया।
हे भव्य! तुम अब गम मत करो। जिस समय जैसी होनी होती है सो ही कर रहती है। होनहार को कोई नहीं टाल सकता। देख कहां यह वन और कहां सीता सहित श्रीराम का आगमन और कहां हमारा वनचर्या का अवग्रह जो वन में श्रावक के आहार मिलेगा तो लेवेंगे और कहां तुम्हारा हमको देख प्रति बोध होना?
भवदुःख से भयभीत पक्षी को मुनिराज ने कहा–
हे पक्षी! तुम निर्भय होकर श्रावक के व्रत लेवो, शान्त भाव धारण करो, किसी प्राणी को पीड़ा मत दो, अहिंसा व्रत धारो, मृषावाणी तज दो, सत्यव्रत धारो, पर वस्तु का ग्रहण तज दो, ब्रह्मचर्य का पालन करो, संतोष धारो, रात्रि भोजन व अभक्ष आहार का त्याग करो। त्रिकाल संध्या में जिनेन्द्र का ध्यान करो।
तब पक्षी ने बारम्बार मुनि के निकट नमस्कार कर श्रावक के व्रत धारण किये। तब सीता ने उसे उत्तम श्रावक जान प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरा।
इस गहन वन में अनेक क्रूर जीव हैं। इस सम्यग्दृष्टि पक्षी की तुम्हें सदा काल रक्षा करनी है।
राजा जनक की पुत्री ने विश्वास दिलाया–
जैसे गरुड़ की माता गरुड़ को पालती है, वैसे ही मैं इसकी रक्षा व पालना करूंगी।
श्रीराम लक्ष्मण पक्षी को जिन धर्मीजान अत्यन्त धर्मानुराग पुरित हुए की स्तुति कर नमस्कार किया दोनों मुनि विहार कर गये।
राम लक्ष्मण के समीप ये पक्षी श्रावक के व्रत धारण कर महास्वाद संयुक्त भोजन करने लगा। स्वर्ण समान पंखोंयुक्त पक्षी का नाम सीता ने जटायु रखा। सदा उसकी रक्षा करते थे। जनक की पुत्री सीता ताल बजाते और राम लक्ष्मण दोऊ भाई ताल के अनुसार तान लावें तब यह जटायु पक्षी रविसमान कान्तिमय हर्षित होकर ताल के अनुसार नृत्य करें।

अथानन्तर पात्रदान के प्रभाव से सीता राम लक्ष्मण इस लोक में रत्न हेमादि सम्पदा युक्त हुए। एक भव्य सुवर्णमयी रत्न जड़ित, ताके मनोहर स्तम्भ जिन पर मोतियों की मालाऐं लूम रही है, सुन्दर झालरें, सुगन्धित चन्दन कपूर से बने जिसमें सेज, आसन कांति वस्त्र, सर्व सुगन्ध युक्त ऐसा एक विमान समान रथ बनाया। जिसके चार हाथी जुते हुए, उसमें राम, सीता, लक्ष्मण, जटायु सहित रमणीक वन में भ्रमण करते हैं। किसी का भय नहीं, कोई घात नहीं, कहीं एक दिन, कहीं पन्द्रह दिन, कहीं एक मास मनवांछित क्रीड़ा करे, यहां निवास करें, वहां निवास करें। महा निर्मल निझरनों को निरखते, स्वेच्छानुसार भ्रमण करते, वे धीर वीर सिंह समान निर्भय दंडक वन के मध्य पहुंच गये। जहां से नदियां निकले। जिनका मोती के हार समान उज्ज्वल जल, अनेक वृक्ष शोभित है, स्वयमेव उपजे नाना प्रकार के धान्य, महारस के भरे सांठे, नाना प्रकार की बेलें, नाना प्रकार के फल फूल मानों दूसरा नन्दन वन ही है। शीतल मन्द सुगन्ध पवन ऐसा लगे वह वन राम, सीता के आने से हर्ष कर नृत्य कर रहा है।

नदी के तट पर मनोहर स्थल देख हस्तिरथ उतार कर लक्ष्मण नाना स्वाद के सुन्दर मीठे फल लाये। फिर राम, सीता सहित जल क्रीड़ा में मग्न हो गये। जैसी जल क्रीड़ा इन्द्र नागेन्द्र चक्रवर्ती करें वैसी राम लक्ष्मण ने की। मानो वह नदी रामरूप कामदेव को देख रति समान मनोहर रूप धारी हुई। सीता गान करने लगी गाने के अनुसार रामचन्द्र जी ताल देने लगे।

जल क्रीड़ा से निवृत हो पास में लता मण्डप में बैठ कर मधुर फल खाये- फिर नाना प्रकार की सुन्दर कथाएँ सुनाने लगे- जटायु के मस्तक पर हाथ रख सीता व लक्ष्मण आनन्द से कथा श्रवण करने लगे। राम लक्ष्मण से कहने लगे।

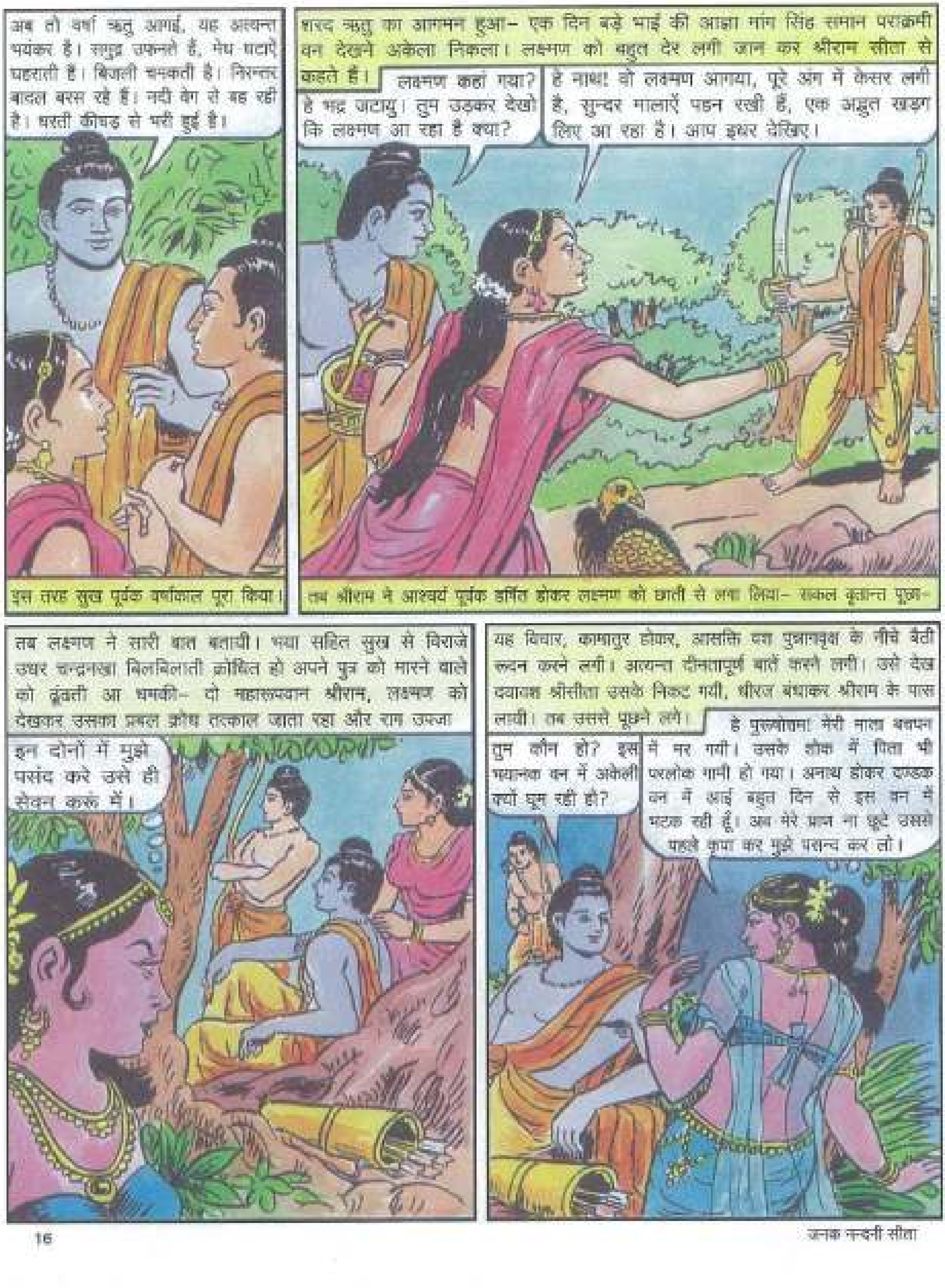
अब तो वर्षा ऋतु आगई, यह अत्यन्त भयंकर है। समुद्र उफनते हैं, मेघ घटाएँ घहराती हैं। बिजली चमकती है। निरन्तर बादल बरस रहे हैं। नदी वेग से बह रही है। धरती कीचड़ से भरी हुई है।
इस तरह सुख पूर्वक वर्षाकाल पूरा किया।
शरद ऋतु का आगमन हुआ– एक दिन बड़े भाई की आज्ञा मांग सिंह समान पराक्रमी वन देखने अकेला निकला। लक्ष्मण को बहुत देर लगी जान कर श्रीराम सीता से कहते हैं।
लक्ष्मण कहां गया? हे भद्र जटायु! तुम उड़कर देखो कि लक्ष्मण आ रहा है क्या?
हे नाथ! वो लक्ष्मण आगया, पूरे अंग में केसर लगी है, सुन्दर मालाएँ पहन रखी हैं, एक अद्भुत खड्ग लिए आ रहा है। आप इधर देखिए।
तब श्रीराम ने आश्चर्य पूर्वक हर्षित होकर लक्ष्मण को छाती से लगा लिया– सकल वृतान्त पूछा–
तब लक्ष्मण ने सारी बात बतायी। भ्राता सहित सुख से विराजे उधर चन्द्रनखा बिलबिलाती क्रोधित हो अपने पुत्र को मारने वाले को ढूंढती आ धमकी– दो महाबलवान श्रीराम, लक्ष्मण को देखकर उसका प्रबल क्रोध तत्काल जाता रहा और राग उपजा
इन दोनों में मुझे पसंद करे उसे ही सेवन करूं मैं।
यह विचार, कामातुर होकर, आसक्ति वश पुन्नागवृक्ष के नीचे बैठी रुदन करने लगी। अत्यन्त दीनतापूर्ण बातें करने लगी। उसे देख दयावश श्रीसीता उसके निकट गयी, धीरज बंधाकर श्रीराम के पास लायी। तब उससे पूछने लगे।
तुम कौन हो? इस भयानक वन में अकेली क्यों घूम रही हो?
हे पुरुषोत्तम! मेरी माता बचपन में मर गयी। उसके शोक में पिता भी परलोक गामी हो गया। अनाथ होकर दण्डक वन में आई बहुत दिन से इस वन में भटक रही हूँ। अब मेरे प्राण ना छूटे उससे पहले कृपा कर मुझे पसन्द कर लो।

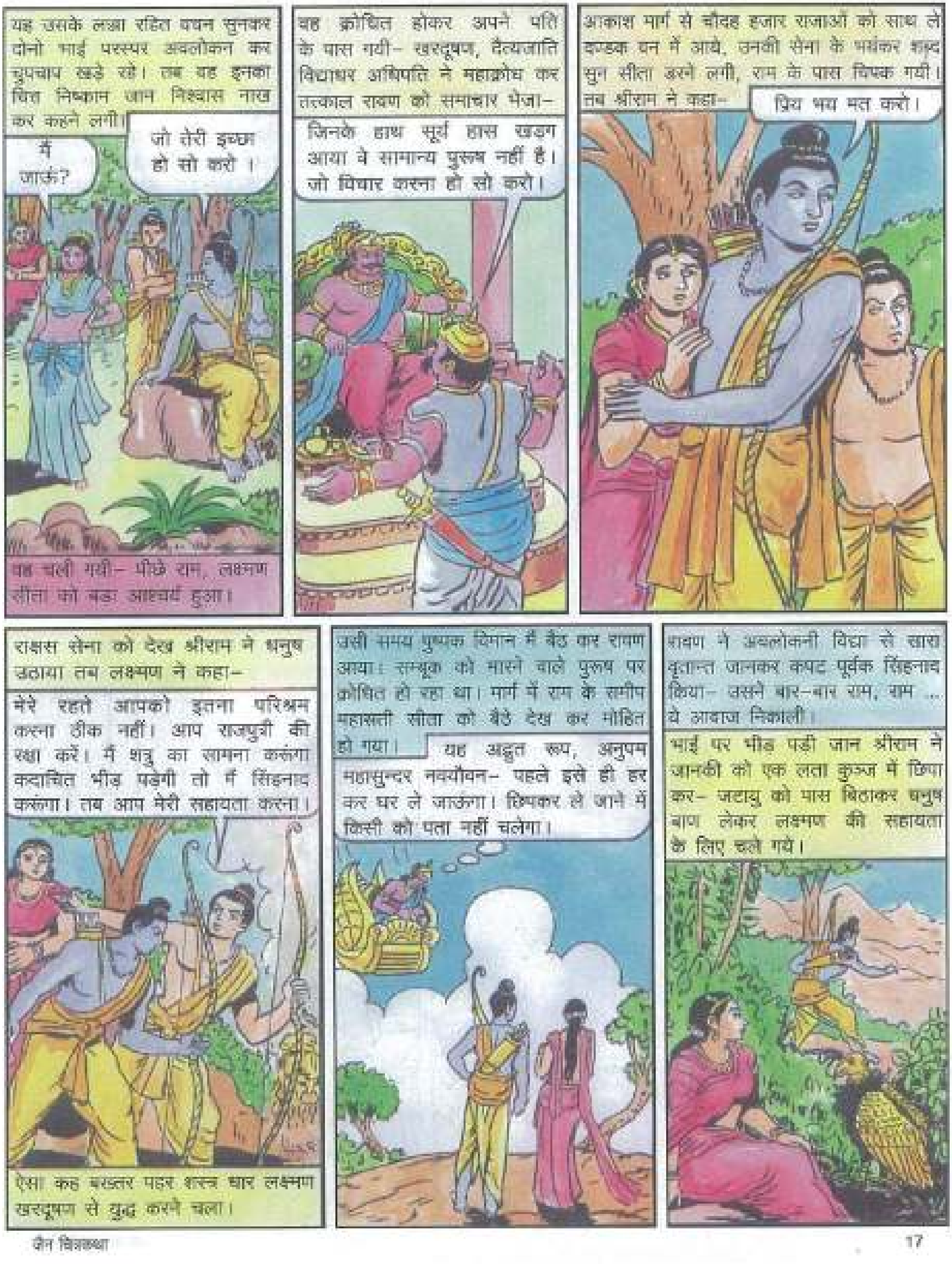
यह उसके लज्जा रहित वचन सुनकर दोनो भाई परस्पर अवलोकन कर चुपचाप खड़े रहे। तब वह इनका चित्त निष्काम जान निश्वास नाख कर कहने लगी।
मैं जाऊं?
जो तेरी इच्छा हो सो करो।
वह चली गयी– पीछे राम, लक्ष्मण सीता को बड़ा आश्चर्य हुआ।
वह क्रोधित होकर अपने पति के पास गयी– खरदूषण, दैत्यजाति विद्याधर अधिपति ने महाक्रोध कर तत्काल रावण को समाचार भेजा–
जिनके हाथ सूर्य हास खड्ग आया वे सामान्य पुरुष नहीं है। जो विचार करना हो सो करो।
आकाश मार्ग से चौदह हजार राजाओं को साथ ले दण्डक वन में आये, उनकी सेना के भयंकर शब्द सुन सीता डरने लगी, राम के पास छिपक गयी। तब श्रीराम ने कहा–
प्रिय भय मत करो।
राक्षस सेना को देख श्रीराम ने धनुष उठाया तब लक्ष्मण ने कहा–
मेरे रहते आपको इतना परिश्रम करना ठीक नहीं। आप राजपुत्री की रक्षा करें। मैं शत्रु का सामना करूंगा कदाचित भीड़ पड़ेगी तो मैं सिंहनाद करूंगा। तब आप मेरी सहायता करना।
ऐसा कह बख्तर पहर शस्त्र धार लक्ष्मण खरदूषण से युद्ध करने चला।
उसी समय पुष्पक विमान में बैठ कर रावण आया। सम्बूक को मारने वाले पुरुष पर क्रोधित हो रहा था। मार्ग में राम के समीप महासती सीता को बैठे देख कर मोहित हो गया।
यह अद्भुत रूप, अनुपम महासुन्दर नवयौवन– पहले इसे ही हर कर घर ले जाऊंगा। छिपकर ले जाने में किसी को पता नहीं चलेगा।
रावण ने अवलोकनी विद्या से सारा वृतान्त जानकर कपट पूर्वक सिंहनाद किया– उसने बार-बार राम, राम ... ये आवाज निकाली।
भाई पर भीड़ पड़ी जान श्रीराम ने जानकी को एक लता कुन्ज में छिपा कर– जटायु को पास बिठाकर धनुष बाण लेकर लक्ष्मण की सहायता के लिए चले गये।

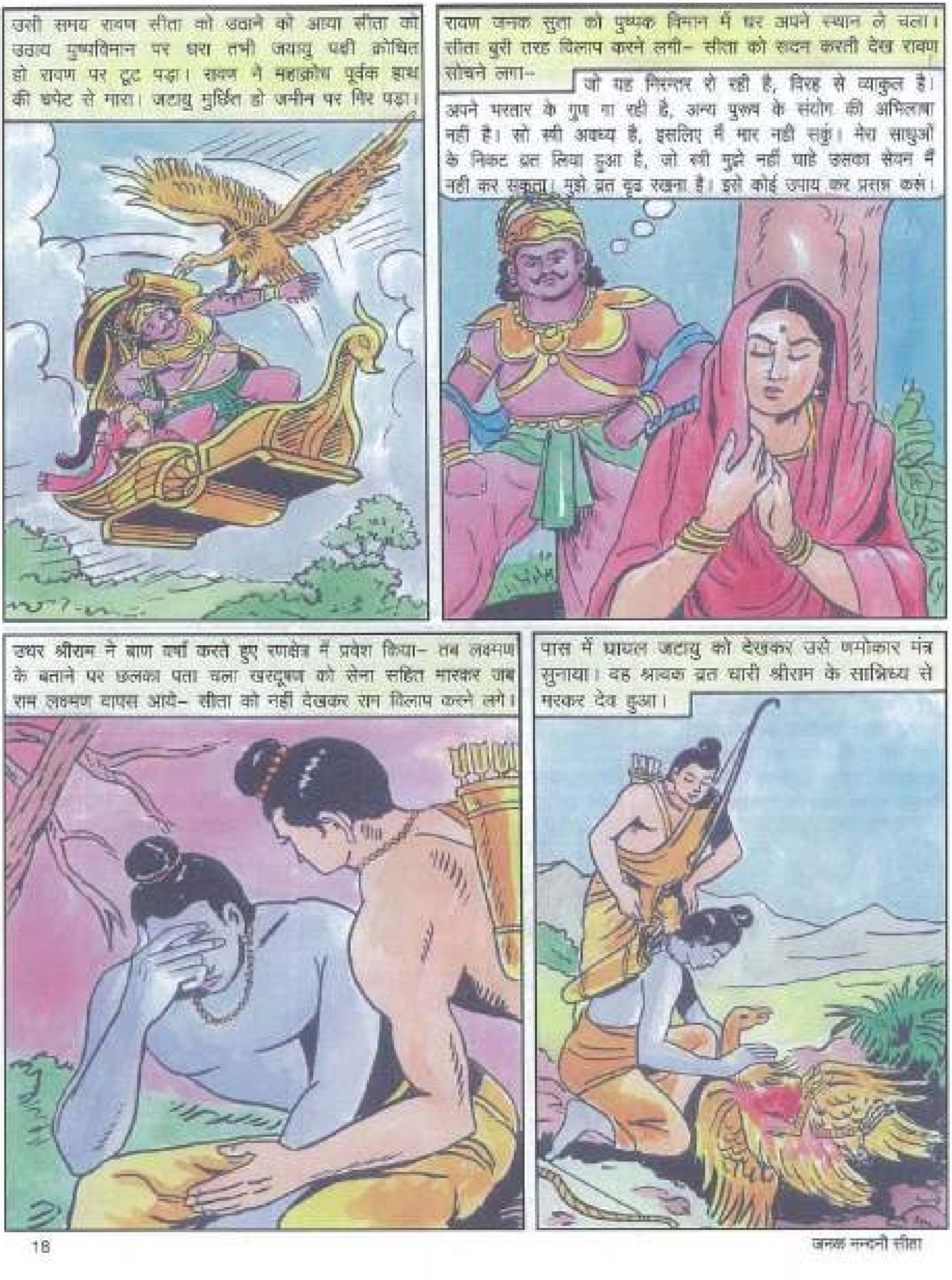
उसी समय रावण सीता को उठाने को आया सीता को उठाय पुष्पविमान पर धरा तभी जटायु पक्षी क्रोधित हो रावण पर टूट पड़ा। रावण ने महाक्रोध पूर्वक हाथ की झपेट से मारा। जटायु मुर्छित हो जमीन पर गिर पड़ा।
रावण जनक सुता को पुष्पक विमान में धर अपने स्थान ले चला। सीता बुरी तरह विलाप करने लगी– सीता को रुदन करती देख रावण सोचने लगा–
जो यह निरन्तर रो रही है, विरह से व्याकुल है। अपने भरतार के गुण गा रही है, अन्य पुरुष के संयोग की अभिलाषा नहीं है। सो स्त्री अवध्य है, इसलिए मैं मार नहीं सकुं। मैंने साधुओं के निकट व्रत लिया हुआ है, जो स्त्री मुझे नहीं चाहे उसका सेवन मैं नहीं कर सकता। मुझे व्रत दृढ़ रखना है। इसे कोई उपाय कर प्रसन्न करूं।
उधर श्रीराम ने बाण वर्षा करते हुए रणक्षेत्र में प्रवेश किया– तब लक्ष्मण के बताने पर छलका पता चला खरदूषण को सेना सहित मारकर जब राम लक्ष्मण वापस आये– सीता को नहीं देखकर राम विलाप करने लगे।
पास में घायल जटायु को देखकर उसे णमोकार मंत्र सुनाया। वह श्रावक व्रत धारी श्रीराम के सान्निध्य से मरकर देव हुआ।

तदन्तर रावण सीता को लेकर विमान के शिखर पर गया– शोक विह्वल सीता का मुख कमल कुमला गया देख रावण दीन वचन कहने लगा।
हे देवी ! मैं कामवाण से पीड़ित हूं, हे सुन्दरी। यह तेरा मुखकमल सर्वथा कोप संयुक्त है तो और भी मनोहर लगता है। प्रसन्न हो जावो, एक बार मेरी तरफ देखलो। विमान शिखर पर चारों तरफ देखो, सूर्य से भी ऊपर आकाश में आया हूँ, मेरू कुलाचल और समुद्र सहित पृथ्वी देखो मानो खिलौना है।
हे अधम। दुर रह, मेरे अंग का स्पर्श मत कर, ऐसे निंद्य वचन कभी मत बोल। रे पापी ! अल्पायु ! कुगतिगामी ! अपयशी ! तेरा यह दुराचार तुझे ही भयकारी है। परदारा की अभिलाषा करता तू महादुःख पावेगा। कर्महीन तु बहुत पछतावेगा।
खरदूषण की मदद को गये हस्त प्रहस्तादि उसके मरने के बाद उदास होकर लंका आये। रावन ने किसी की ओर नहीं देखा–जानकी को ही नाना वचन कहकर प्रसन्न करने में लगा रहा सो कहां प्रसन्न होने वाली थी, नागके माथे की मणी को कोई प्राप्त नही कर सकता। वैसे ही सीता को कोई मोह में नहीं डाल सकता। रावन देवारण्य उपवन में कल्पवृक्ष की छाया में सीता को बिठा कर अपने भवन गया।
जब तक राम लक्ष्मण की कुशलक्षेम की बात नहीं सुनू तब तक खान–पान का मेरे त्याग है।
उधर रावन ने मन्दोदरी को सिखाकर सीता को मनाने भेजा वह रावण की अठारह हजार रानियों को साथ लेकर देवारण्य उद्यान में सीता के पास जाकर बोली।
हे सुन्दरी हर्ष के स्थान पर विषाद क्यों कर रही हो? जिस स्त्री के रावण पति सोही जगत में धन्य है। सब विद्याधरों का अधिपति, सुरपति विजेता, तीनो लोकों में सबसे सुन्दर, उसे क्यो नहीं चाहती हो। निर्जन बन के वासी, निर्धन, शक्तिहीन उनके लिए क्यों दुःख कर रही हो? सर्वलोकों में श्रेष्ठ, उसे अंगीकार करके क्यों नहीं सुखी होवो।

मेरा कहा जो न करोगी तो जो कुछ तेरा होनहार है सो होगा। रावण बलवान है, कदाचित उसकी बात नहीं मानेगी तो उसके कोप से तुम्हारा भला नहीं होगा। राम लक्मण तुम्हारे सहाई हैं तो रावण के कोप किये उनका भी जीतना नहीं है, इसलिए शीघ्र ही उसे अंगीकार कर परम ऐश्वर्य को पाकर देवदुर्लभ सुख भोग।
तब अश्रुपूर्ण नेत्रों से गद् गद् वाणी में सीता ने कहा –
हे नारी ! यह वचन तुमने सब ही विरुद्ध कहे। तुम पतिव्रता कहलाती हो, पतिव्रताओं के मुख से ऐसे वचन कैसे निकलते हैं। यह शरीर मेरा छिद जाय, भिद जाय, हत जाय, परन्तु अन्य पुरुष को नही चाहूं। रूप चाहे सनतकुमार समान हो या इन्द्र समान हो मेरे क्या काम का। मैं सर्वथा अन्य पुरुष को नही चाहूं। तुम सब अठारह हजार रानियां इकट्ठी होकर आई हो, तुम्हारा कहना मैं नहीं मानूंगी। तुम्हारी इच्छा हो जैसा करो।

उसी समय मदन के आताप पीड़ित रावण जैसे तृषातुर हाथी गंगा के तीर आवे वैसे सीता के समीप आकर आदरपूर्वक मधुर वाणी में कहने लगा–
हे देवी! तू भय मत कर मैं तेरा भक्त हूं। हे सुन्दरी। चित्त लगाकर एक बिनती सुन। मैं तीन लोक में किस वस्तु रहित हूं जो तू मुझे नही चाहती है।
ऐसा कह स्पर्श करने लगा– तब सीता क्रोधित होकर कहने लगी–
पापी! परे जा, मेरा अंग मत स्पर्श कर।

क्रोध और अभिमान छोड़ प्रसन्न हो, शची इन्द्राणी समान दिव्य भोगों की स्वामिनी बनो।
कुशील पुरुष का वैभव मल समान है और जो शीलवंत है उनके दरिद्र ही आभूषण है, जो उत्तम वंश में जन्मे हैं उनके शील की हानि से दोनों लोक बिगड़ते हैं, इसलिए मेरे तो मरण ही शरण हो तू पर स्त्री की अभिलाषा रखता है सो तेरा जीना वृथा है।

इस प्रकार जब सीता ने तिरस्कार किया तब रावन ने क्रोध कर माया प्रकट की– मद झरती माया मई हाथियों की घटा आई। बहुत से अग्नि के गुब्बारे बरसने लगे। लपलपाट करते जीभ के सर्प आये। महाक्रूर वानर उछलकूद करने लगे। अग्नि की ज्वाला समान जीभ लपलपाते अजगर आये।
फिर अंधकार समान काले ऊंचे व्यंतर हुंकार करते आये। रावण ने उपसर्ग किये तथापि सीता नहीं डरी।
प्रभात हुआ– विभीषण आदि रावण के भाई खरदूषण के शोक पर रावण के पास आये। सो नीचा मुख किये। आंसू डारते भूमिपर बैठे। उस समय पट के अंतर शोक की भरी सीता के रुदन के शब्द विभीषण ने सुने– वह कहने लगा–
कौन स्त्री रुदन कर रही है? अपने स्वामी से बिछुड़ी है। याका शोकसंयुक्त शब्द दुःख को प्रकट दिखा रहे हैं।
ये विभीषण के शब्द सुन सीता अधिक रोने लगी, सज्जन को देख शोक बढ़ता ही है।
मैं राजा जनक की पुत्री, भामण्डल की बहिन राम की राणी, दशरथ की पुत्रवधु, लक्ष्मण मेरा देवर, सो खरदूषण से लड़ने गया। उसके पीछे मेरा स्वामी भाई की मदद के लिए गया, वन में अकेली देख या दुष्टचित्त ने हरण किया। मेरा पति मेरे बिना प्राण तजेगा इसलिए हे भाई मुझे मेरे पति के पास शीघ्र भेज दो।

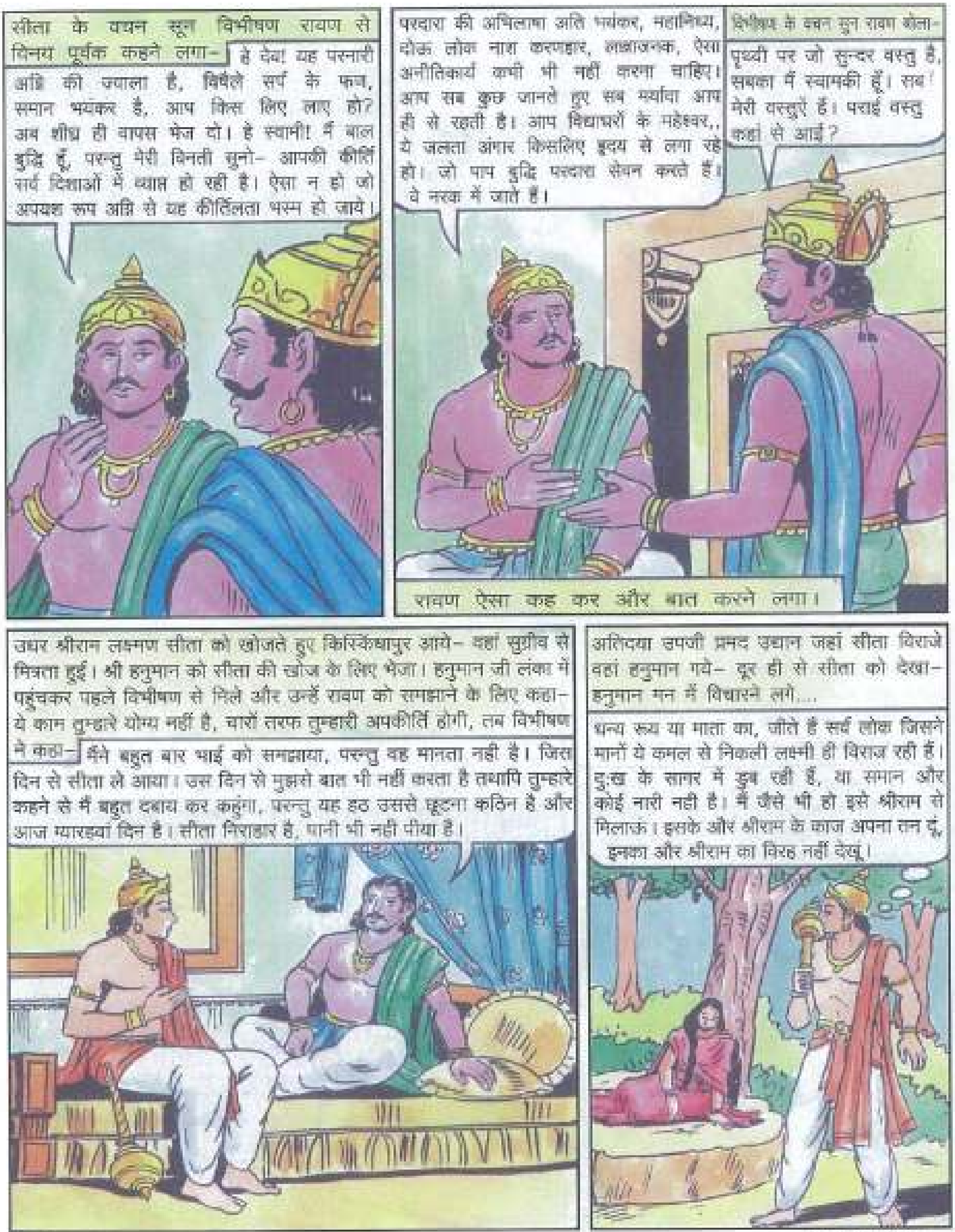

सीता के वचन सुन विभीषण रावण से विनय पूर्वक कहने लगा-
हे देव! यह परनारी अग्नि की ज्वाला है, विषैले सर्प के फन, समान भयंकर है, आप किस लिए लाए हो? अब शीघ्र ही वापस भेज दो। हे स्वामी! मैं बाल बुद्धि हूँ, परन्तु मेरी विनती सुनो- आपकी कीर्ति सर्व दिशाओं में व्याप्त हो रही है। ऐसा न हो जो अपयश रूप अग्नि से यह कीर्तिलता भस्म हो जाये।
परदारा की अभिलाषा अति भयंकर, महानिंद्य, दोऊ लोक नाश करणहार, लज्जाजनक, ऐसा अनीतिकार्य कभी भी नहीं करना चाहिए। आप सब कुछ जानते हुए सब मर्यादा आप ही से रहती है। आप विद्याधरों के महेश्वर,, ये जलता अंगार किसलिए हृदय से लगा रहे हो। जो पाप बुद्धि परदारा सेवन करते हैं। वे नरक में जाते हैं।
विभीषण के वचन सुन रावण बोला-
पृथ्वी पर जो सुन्दर वस्तु है, सबका मैं स्वामकी हूँ। सब मेरी वस्तुऐं हैं। पराई वस्तु कहां से आई?
रावण ऐसा कह कर और बात करने लगा।
उधर श्रीराम लक्ष्मण सीता को खोजते हुए किष्किंधापुर आये- वहां सुग्रीव से मित्रता हुई। श्री हनुमान को सीता की खोज के लिए भेजा। हनुमान जी लंका में पहुंचकर पहले विभीषण से मिले और उन्हें रावण को समझाने के लिए कहा- ये काम तुम्हारे योग्य नहीं है, चारों तरफ तुम्हारी अपकीर्ति होगी, तब विभीषण ने कहा-
मैंने बहुत बार भाई को समझाया, परन्तु वह मानता नही है। जिस दिन से सीता ले आया। उस दिन से मुझसे बात भी नहीं करता है तथापि तुम्हारे कहने से मैं बहुत दबाव कर कहुंगा, परन्तु यह हठ उससे छूटना कठिन है और आज ग्यारहवां दिन है। सीता निराहार है, पानी भी नही पीया है।
अरिदया उपजी प्रमद उद्यान जहां सीता विराजे वहां हनुमान गये- दूर ही से सीता को देखा- हनुमान मन में विचारने लगे....
धन्य रूप या माता का, जीते हैं सर्व लोक जिसने मानों ये कमल से निकली लक्ष्मी ही विराज रही हैं। दुःख के सागर में डूब रही हैं, या समान और कोई नारी नही है। मैं जैसे भी हो इसे श्रीराम से मिलाऊं। इसके और श्रीराम के काज अपना तन दूं, इनका और श्रीराम का विरह नहीं देखूं।

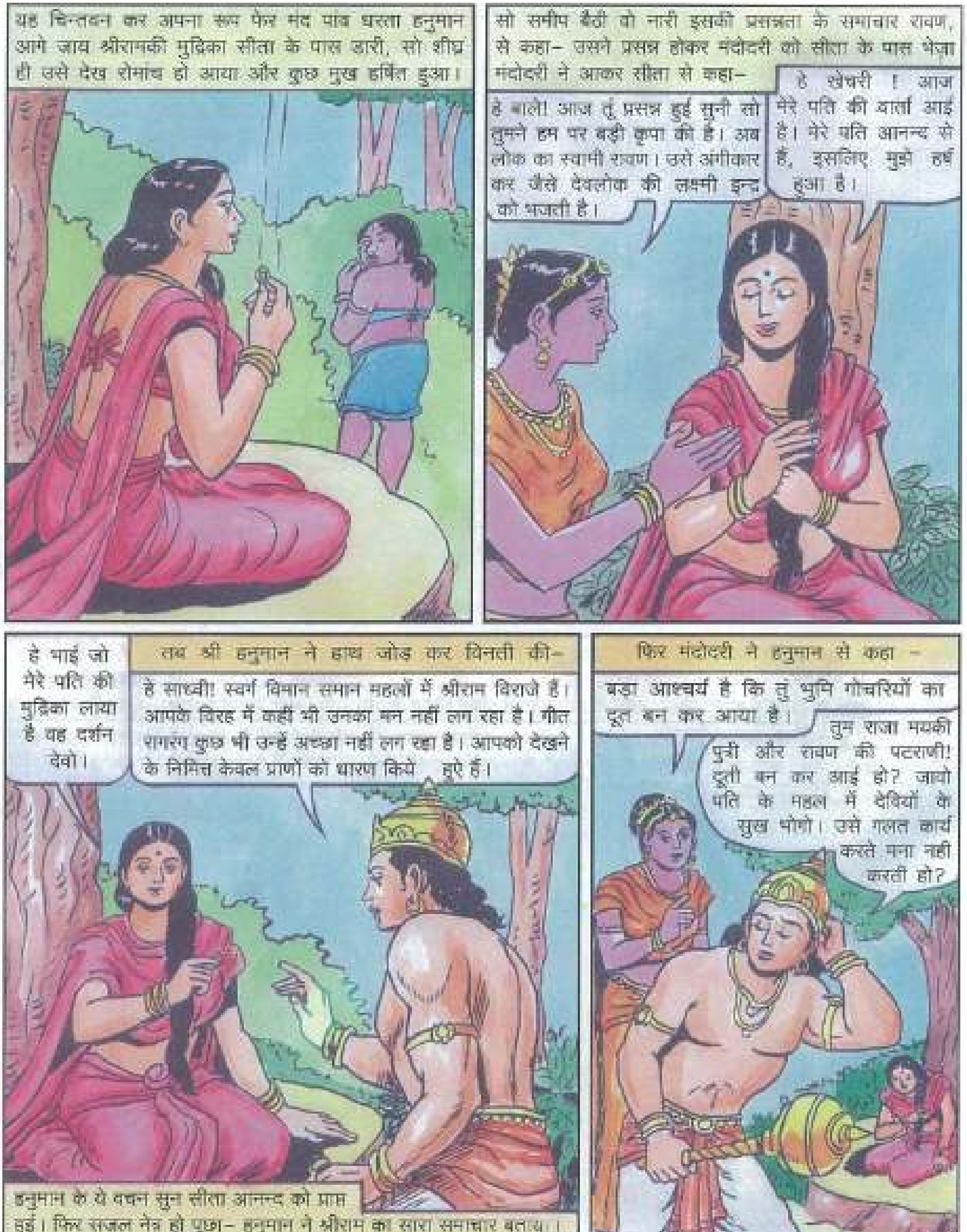
यह चिन्तवन कर अपना रूप फेर मंद मंद चलता हनुमान आगे जाय श्रीरामकी मुद्रिका सीता के पास डारी, सो शीघ्र ही उसे देख रोमांच हो आया और कुछ मुख हर्षित हुआ।
सो समीप बैठी वो नारी इसकी प्रसन्नता के समाचार रावण, से कहा– उसने प्रसन्न होकर मंदोदरी को सीता के पास भेजा मंदोदरी ने आकर सीता से कहा–
हे बाले! आज तू प्रसन्न हुई सुनी सो तुमने हम पर बड़ी कृपा की है। अब लोक का स्वामी रावण। उसे अंगीकार कर जैसे देवलोक की लक्ष्मी इन्द्र को भजती है।
हे खेचरी ! आज मेरे पति की वार्ता आई है। मेरे पति आनन्द से हैं, इसलिए मुझे हर्ष हुआ है।
तब श्री हनुमान ने हाथ जोड़ कर विनती की–
हे भाई जो मेरे पति की मुद्रिका लाया है वह दर्शन देवो।
हे साध्वी! स्वर्ग विमान समान महलों में श्रीराम विराजे हैं। आपके विरह में कहीं भी उनका मन नहीं लग रहा है। गीत रागरंग कुछ भी उन्हें अच्छा नहीं लग रहा है। आपको देखने के निमित्त केवल प्राणों को धारण किये हुऐ हैं।
हनुमान के ये वचन सुन सीता आनन्द को प्राप्त हुई। फिर सजल नेत्र हो पूछा– हनुमान ने श्रीराम का सारा समाचार बताया।
फिर मंदोदरी ने हनुमान से कहा –
बड़ा आश्चर्य है कि तू भूमि गोचरियों का दूत बन कर आया है।
तुम राजा मयकी पुत्री और रावण की पटरानी! दूती बन कर आई हो? जावो पति के महल में देवियों के सुख भोगो। उसे गलत कार्य करते मना नहीं करती हो?

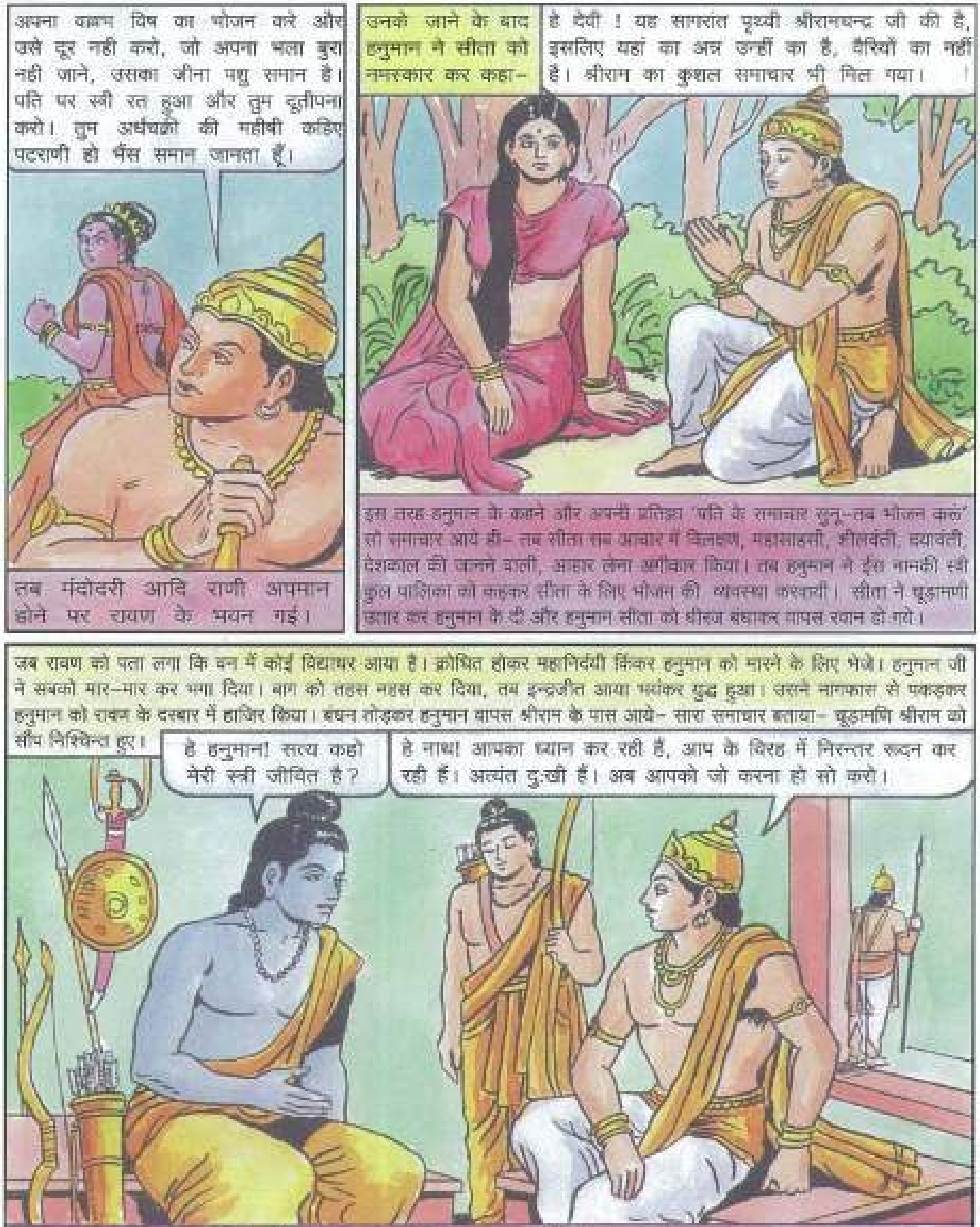
अपना वल्लभ विष का भोजन करे और उसे दूर नहीं करो, जो अपना भला बुरा नहीं जाने, उसका जीना पशु समान है। पति पर स्त्री रत हुआ और तुम दूतीपना करो। तुम अर्धचक्री की महीषी कहिए पटराणी हो भैंस समान जानता हूँ।
तब मंदोदरी आदि राणी अपमान होने पर रावण के भवन गई।
उनके जाने के बाद हनुमान ने सीता को नमस्कार कर कहा–
हे देवी ! यह सागरांत पृथ्वी श्रीरामचन्द्र जी की है, इसलिए यहां का अन्न उन्हीं का है, वैरियों का नहीं है। श्रीराम का कुशल समाचार भी मिल गया।
इस तरह हनुमान के कहने और अपनी प्रतिज्ञा 'पति के समाचार सुनूं–तब भोजन करूं' सो समाचार आये ही– तब सीता सब आचार में विलक्षण, महासाहसी, शीलवंती, दयावंती, देशकाल की जानने वाली, आहार लेना अंगीकार किया। तब हनुमान ने ईरा नामकी स्त्री कुल पालिका को कहकर सीता के लिए भोजन की व्यवस्था करवाई। सीता ने चूड़ामणी उतार कर हनुमान को दी और हनुमान सीता को धीरज बंधाकर वापस रवाना हो गये।
जब रावण को पता लगा कि वन में कोई विद्याधर आया है। क्रोधित होकर महानिर्दयी किंकर हनुमान को मारने के लिए भेजे। हनुमान जी ने सबको मार–मार कर भगा दिया। बाग को तहस नहस कर दिया, तब इन्द्रजीत आया भयंकर युद्ध हुआ। उसने नागफास से पकड़कर हनुमान को रावण के दरबार में हाजिर किया। बंधन तोड़कर हनुमान वापस श्रीराम के पास आये– सारा समाचार बताया– चूड़ामणि श्रीराम को सौंप निश्चिन्त हुए।
हे हनुमान! सत्य कहो मेरी स्त्री जीवित है?
हे नाथ! आपका ध्यान कर रही है, आप के विरह में निरन्तर रुदन कर रही हैं। अत्यंत दुःखी हैं। अब आपको जो करना हो सो करो।
तब श्रीराम लक्ष्मण ने सुग्रीव की वानर सेना, भामण्डल की विद्याधर सेना ने लंका का घेरा डाला...

उधर रावण ने बहुरूपिणी विद्या सिद्ध करली और सीता के पास जाकर बोला–
हे देवी ! मैंने कपट पूर्वक तुम्हारा हरण किया, यह मेरे लिए शोभा की बात नहीं है परन्तु कर्म की गति ऐसी है, मैंने प्रण कर रखा है कि 'बल पूर्वक परनारी का सेवन नहीं करूंगा' इसलिए मैंने तुम्हारी कृपा की आशा रखी। हे सुन्दरी ! अब मेरे बाणों से तुम्हारे अवलम्बन राम लक्ष्मण मिटे ही जान। तुम मेरे साथ पुष्पक विमान में बैठ आनन्द से विहार करो।
सीता ने दोनों हाथ कानों पर रखकर गद्‌गद् वाणी में कहा–
हे दशानन! तू बड़े कुल में जन्मा है तो ऐसा करना कदाचित् संग्राम में तेरे और मेरे वल्लभ के शस्त्र प्रहार हो तो पहले ये मेरा संदेशा कहे बिना मेरे कंथ को मत मारना ! कहना – हे पद्म! भामण्डल की बहिन ने तुम से कहा है कि 'तुम्हारे वियोग शोक में महादु:खी हूँ, मेरे प्राण तुम्हारे तक ही हैं। तुम्हारे दर्शन की आशा में ये प्राण टिके हुए हैं।'
ऐसा कह मुर्छित होकर भूमि पर गिर पड़ी। यह अवस्था देख

रावण का दिल पसीजा– दुःखी हुआ चिन्ता में सोचने लगा।
मैंने अति अयोग्य कार्य किया। जो ऐसे स्नेहवान युगल का वियोग किया– लोक में अपयश का भागी बना। यह अब तक देवांगना लग रही थी परन्तु अब विषैली नागन लग रही है। विभीषण का कहा मान लेता तो अच्छा था। अब तो महायुद्ध ठन गया। अनेक योद्धा मारे गये। कदाचित जानकी राम के पास भेजें तो लोग मुझे कायर समझेंगे और युद्ध में महाहिंसा हो रही है। राम लक्ष्मण को जीवित पकड़ूं फिर बहुत धन देकर सीता सहित भेजूं, तो पाप न लगे। यह न्याय है, इसलिए मैं ऐसा ही करूंगा।

भयंकर संग्राम में रावण मारा गया। युद्ध समाप्त हो गया। श्रीराम, लक्ष्मण, हनुमान, अंगद, भामण्डल सभी ने लंका नगर में प्रवेश किया– सीता के समीप जो तनिका नामकी सखी– इशारे से सीता को कहने लगी–
हे देवी! चन्द्रमा समान है छत्र जिनका, चांद सूरज समान है कुण्डल जिनके, शरद निझरने समान है हार जिनके सो पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र तुम्हारे वल्लभ आये हैं। तुम वियोग में उदास हो रही हो। हे कमल नयनी! जैसे दिग्गज आते हैं वैसे आ रहे हैं। जैसे बादलों से चन्द्रमा निकलता है वैसे ही हाथी से उतर कर आये हैं।

तब सीता स्वामी को निकट आया जान हर्षित होकर सन्मुख आई। सो महा ज्योति का धारणवाला, सजल नेत्र उसे हृदय से लगाकर सुख सागर में मग्न हुआ। सीता राम का समागम देखकर देव प्रसन्न हुए, पुष्प वर्षा होने लगी। लक्ष्मण ने चरण स्पर्श किया, भामण्डल भाई मिले, हनुमान, नल, नील, अंगद, विराधित, चन्द्र सुषेण, जांबंद आदि बड़े-बड़े विद्याधर सुनाय कर वंदना व स्तुति करने लगे वस्त्राभूषण भेंट करने लगे।

लंका का राज्य विभीषण को देकर श्रीराम, सीता, लक्ष्मण पुष्पक विमान से अयोध्या आये, हर्षोल्लास पूर्वक भव्य स्वागत हुआ।

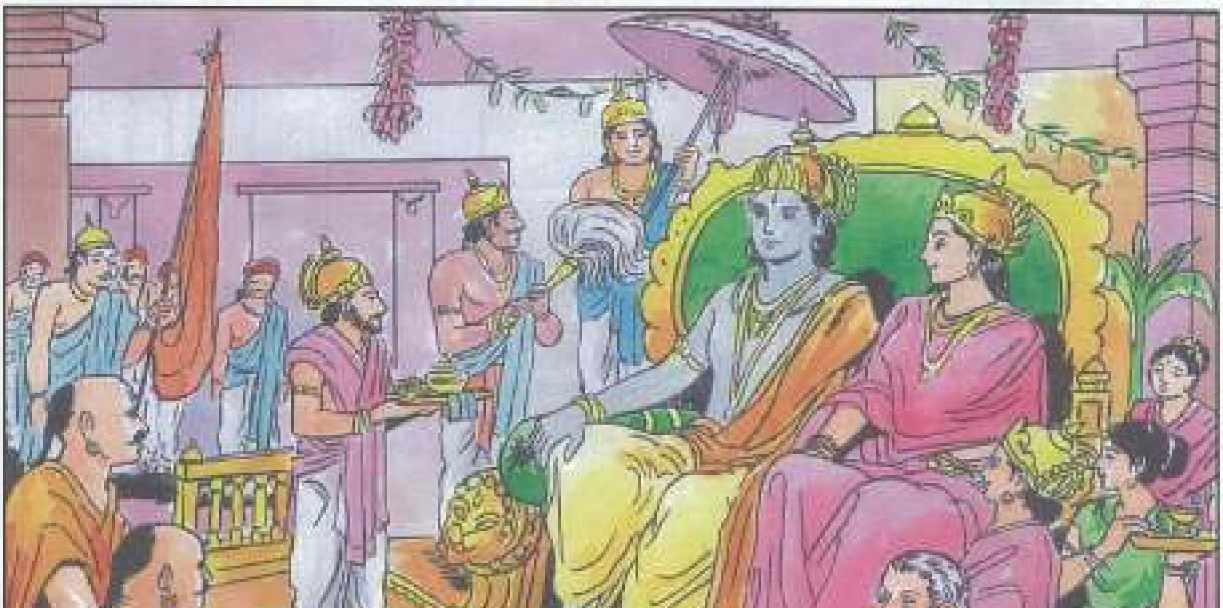

श्रीसीता राम लक्ष्मण राज्य सिंहासन पर विराजमान हुए। दशों दिशाओं में श्रीराम सीता की यशोगाथा शोभायमान हुई।

परन्तु सीता के कर्मदोष से मूढ़ लोग अपवाद उठाने लगे।
रावण ने सीता का हरण किया। श्रीराम जीत कर वापस ले आये। फिर से घर में रखी, राम महाज्ञानी बड़े कुलीन, चक्री, महावीर उनके घर में यह रीति तो और लोगों की क्या बात।
ये अफवाह जब श्रीराम के पास पहुंची तब श्रीराम ने भली भांति सोच विचार कर सेनापति को बुलाय और आदेश दिया–
शीघ्र ही सीता को ले जाओ, मार्ग में जिन मंदिर दर्शन करवाकर उनकी आशा पूर्णकर सिंहनाद की अटवी, जहां मनुष्य नाम नहीं वहां अकेली छोड़ आवो।
जो आज्ञा होगी वही होगा, कुछ वितर्क नहीं करूंगा।
उसने महारानी जानकी के पास जाकर कहा –
हे माता! उठो रथ में चढ़ो चैत्यालय दर्शन की वांछा है सो करो–
तब सीता रथ चढ़ी भगवान को नमस्कार किया और रथ पवन वेग से बढ़ चला। चलते समय अपशकुन हुए, जिन भक्ति में अनुरागिणी निश्चल चित चली गयी। अपशकुन न गिने। पहाड़ों के शिखर, कन्दरा, वन उपवन, उलंघकर शीघ्र ही रथ दूर गया। भव्य रथ पर जा रही राम की रानी इन्द्राणी समान लग रही थी। नदी के पार जाकर सेनापति ने रथ रोक दिया और अवरुद्ध कण्ठ से अश्रुपूरित आंखों से करबद्ध निवेदन किया।
हे मात:! दुर्जन के वचन से राम अपकीर्ति के भय से जो न तजाजाय तुम्हारा स्नेह उसे तज कर चैत्यालयों के दर्शन की उपजी अभिलाषा पूर्ण कराकर भयानक वन में तजी है। हे देवी! जैसे यति राग परणति को तजे वैसे ही राम ने तुमको तजी है। लक्ष्मण ने कहने की हद थी सो कही कुछ कमी नहीं रखी। अनेक न्याय के वचन कहें परन्तु राम ने हठ नहीं छोड़ी। अब तुमको धर्म ही शरण है। इस संसार में धर्म ही जीव का सहाई है।

ये वचन सुन कर सीता बज्रपात की मारी जैसी पुनः संभलकर कहने लगी–
मुझे प्राण नाथ से मिलाओ–
हे माता! नगरी दूर रही और राम का दर्शन दूर।
तब आंखों में आंसू भरकर कहने लगी–
हे सेनापति! मेरे वचन राम से कहना–जैसे पिता पुत्र की रक्षा करे, वैसे ही आप प्रजा का पालन करना। आप राज्य से सम्यग्दर्शन को विशेष भला जानना। जो अविनाशी सुख का दाता है। अभव्य जीव निन्दा करे तो भी हे पुरुषोत्तम सम्यग्दर्शन कदापि मत छोड़ना। यह अत्यन्त दुर्लभ है। जैसे हाथ में आया रत्न समुद्र में डाल दिया। तो फिर हाथ नहीं आयेगा।
यह जगत दुर्निवार है। जगत का मुख बंद नहीं किया जा सकता। जिसके मुख में जो आवे, सो ही कहे। लोक गडरिया प्रवाह है सो अपने हृदय में हे गुणभूषण लौकिक वार्ता नहीं धरना हम सी जन है। कभी कोई परिहास्य वश अप्रिय वचन कहा हो तो क्षमा करना।
ऐसा कहकर रथ से उतरी और पाषाण भरी पृथ्वी पर अचेत होकर मूर्छा खाय पड़ी। कृतांतवक्र सीता को चेष्टा रहित मूर्छित देखकर बहुत दुःखी हुआ।
हाय! यह भयानक वन अनेक हिंसक जीवों से भरा। महावीर, शूरवीर हो उनके जीने की आशा नहीं तो ये कैसे जीवेगी? इसके प्राण बचना कठिन है। इस महासती माता को मैं अकेली वन में छोड़ कर जा रहा हूँ मेरे समान निर्दयी कौन होगा?
तब मूर्छा से सचेत हुई– तो महादुःख की भरी यूथभ्रष्ट मृगी की तरह विलाप करने लगी।
हाय कमल नयन राम। मेरी रक्षा करो। मैं मन्दभागिनी पूर्व जन्म में अशुभकर्म किये जिसके फल से निर्जन वन में दुःख को प्राप्त हुई। कोई युगल बिछोवा। जिससे मुझे स्वामी का वियोग हुआ। मैं बलभद्र की पटराणी, स्वर्ग समान महल की निवासिनी, अब पाप के उदय से निर्जन वन में भटक रही हूँ।

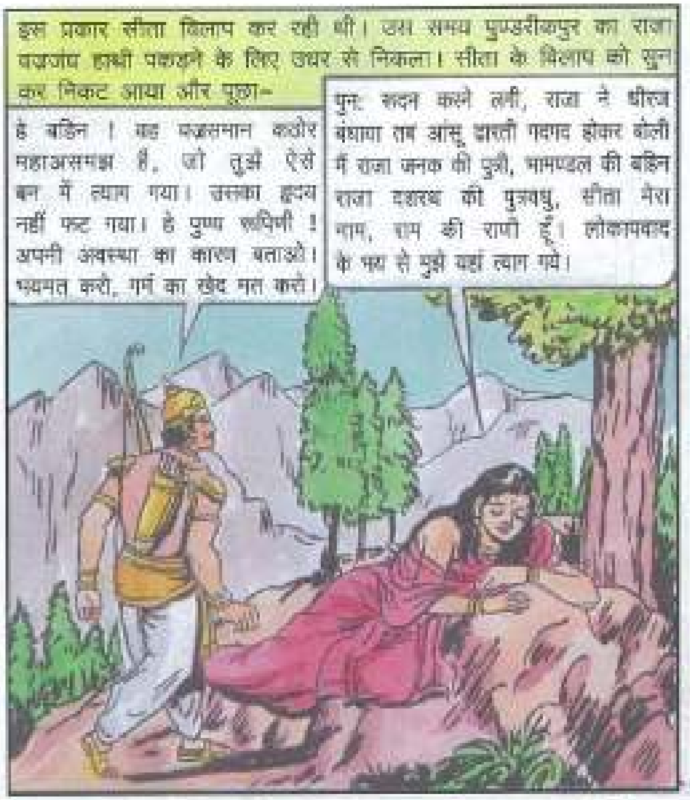
इस प्रकार सीता विलाप कर रही थी। उस समय पुण्डरीकपुर का राजा वज्रजंघ हाथी पकड़ने के लिए उधर से निकला। सीता के विलाप को सुन कर निकट आया और पूछा–
हे बहिन ! वह वज्रसमान कठोर महाअसमझ है, जो तुझे ऐसे वन में त्याग गया। उसका हृदय नहीं फट गया। हे पुण्य रूपिणी ! अपनी अवस्था का कारण बताओ। भयमत करो, गर्भ का खेद मत करो।
पुनः रुदन करने लगी, राजा ने धीरज बंधाया तब आंसू डालती गदगद होकर बोली मैं राजा जनक की पुत्री, भामण्डल की बहिन राजा दशरथ की पुत्रवधु, सीता मेरा नाम, राम की रानी हूँ। लोकापवाद के भय से मुझे यहां त्याग गये।

सारी बात सुनकर राजा वज्रजंघ अति उद्वेग को प्राप्त हुआ सीता के पास आकर आदर पूर्वक कहने लगा।
हे शुभमते! तुम जिनशासन में प्रवीण हो। शोक कर रुदन मत करो। यह आर्तध्यान दुःख का कारण है। वन में हाथी के निमित्त मेरा आना हुआ। मैं वज्रजंघ पुण्डरीकपुर का अधिपति राजा शुभ आचरण का धारक हूँ तू मेरे धर्म के विधान कर बड़ी बहिन है। पुण्डरीकपुर चलो।
निसंदेह हम तुझे आदर से बुलाएँगे, इस तरह धर्मात्मा ने सीता के शांति उपजाई मानो भाई भामण्डल ही मिला है।
तू मेरा अति उत्कृष्ट भाई है। महायशस्वी, शूरवीर, बुद्धिमान शान्तचित्त साधर्मि पर वात्सल्य करने वाला उत्तम जीव है।

तदनन्तर वज्रजंघ ने पालकी मंगवाई, उसपर सीता आरूढ हुई– पुण्डरीकपुर पहुंचे– वहां सबका सम्मान पाकर हर्षित हुई। तदनन्तर नव महीना पूर्ण हुए श्रावण सुदी पूर्णिमा के दिन सुलग्न में चन्द्रमा समान पुत्र युगल को जन्म दिया। राजा वज्रजंघ ने अति उत्सव किया। एक का नाम अनंगलवण, दूजे का मदनांकुश। ये यथार्थ नाम रखे। क्रीड़ा करते सुन्दर बालकों को देख कर सीता समस्त दुःख भूल गई। वे दोनों वीर, महाधीर, ज्ञानवान, लक्ष्मीवान, पृथ्वी के सूर्य पुण्डरीकपुरी में देवों की तरह विचर रहे हैं।

युद्ध कला में निपुण वज्रजंघ के साथ दिग्विजय कर आये– एक बार नारद जी द्वारा श्रीराम, लक्ष्मण का परिचय पाकर सीता का अकारण वनवास जानकर क्रोधित होकर अयोध्या पर चढ़ाई करने चले। सामने श्रीराम लक्ष्मण ने भी युद्ध का डंका बजा दिया भामण्डल को पता चला तो वह विमान में सीता को भी ले आया। फिर वापस पुण्डरीपुरी भेज दिया।

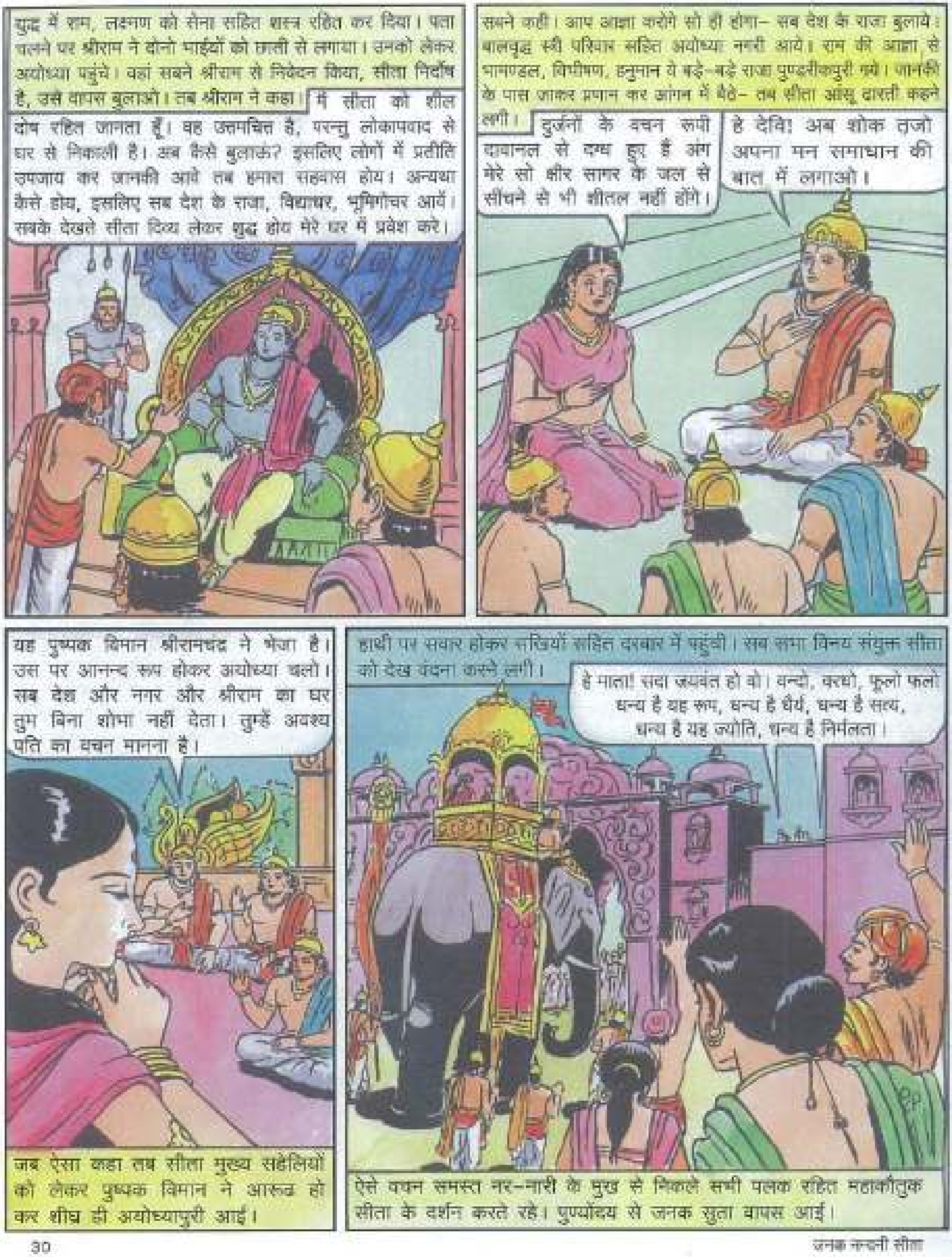
युद्ध में राम, लक्ष्मण को सेना सहित शस्त्र रहित कर दिया। पता चलने पर श्रीराम ने दोनों भाईयों को छाती से लगाया। उनको लेकर अयोध्या पहुंचे। वहां सबने श्रीराम से निवेदन किया, सीता निर्दोष है, उसे वापस बुलाओ। तब श्रीराम ने कहा।
मैं सीता को शील दोष रहित जानता हूँ। वह उत्तमचित्त है, परन्तु लोकापवाद से घर से निकाली है। अब कैसे बुलाऊं? इसलिए लोगों में प्रतीति उपजाय कर जानकी आवे तब हमारा सहवास होय। अन्यथा कैसे होय, इसलिए सब देश के राजा, विद्याधर, भूमिगोचर आवें। सबके देखते सीता दिव्य लेकर शुद्ध होय मेरे घर में प्रवेश करे।
सबने कही। आप आज्ञा करोगे सो ही होगा– सब देश के राजा बुलाये। बालवृद्ध स्त्री परिवार सहित अयोध्या नगरी आये। राम की आज्ञा से भामण्डल, विभीषण, हनुमान ये बड़े–बड़े राजा पुण्डरीकपुरी गये। जानकी के पास जाकर प्रणाम कर आंगन में बैठे– तब सीता आंसू डारती कहने लगी।
दुर्जनों के वचन रूपी दावानल से दग्ध हुए हैं अंग मेरे सो क्षीर सागर के जल से सींचने से भी शीतल नहीं होंगे।
हे देवि! अब शोक तजो अपना मन समाधान की बात में लगाओ।
यह पुष्पक विमान श्रीरामचंद्र ने भेजा है। उस पर आनन्द रूप होकर अयोध्या चलो। सब देश और नगर और श्रीराम का घर तुम बिना शोभा नहीं देता। तुम्हें अवश्य पति का वचन मानना है।
जब ऐसा कहा तब सीता मुख्य सहेलियों को लेकर पुष्पक विमान ने आरूढ़ हो कर शीघ्र ही अयोध्यापुरी आई।
हाथी पर सवार होकर सखियों सहित दरबार में पहुंची। सब सभा विनय संयुक्त सीता को देख वंदना करने लगी।
हे माता! सदा जयवंत हो वो। वन्दो, वरधो, फूलो फलो धन्य है यह रूप, धन्य है धैर्य, धन्य है सत्य, धन्य है यह ज्योति, धन्य है निर्मलता।
ऐसे वचन समस्त नर–नारी के मुख से निकले सभी पलक रहित महाकौतुक सीता के दर्शन करते रहे। पुण्योदय से जनक सुता वापस आई।

जब सीता राम के सामने पहुंची, तब राम ने कहा–
मेरे आगे क्यों खड़ी है ? तुम परे जावो। मैं तुझे देखने का इच्छुक नहीं हूँ तू बहुत मास दशमुख के घर रही तुझे अब मेरे घर रखना कहां उचित है ?
तुम महा निर्दयी हो, तुमने विद्वान होकर मूर्खों की तरह मेरा अपमान किया सो कहां उचित है? मुझ गर्भवती को जिन दर्शन की अभिलाषा उपजाकर कुटिलता पूर्वक यात्रा का नाम लेकर विषम वन में डाली। यह कहां उचित है? मेरा कुमरण होता और कुगति जाती इससे तुम्हें क्या सिद्ध होता? जो तुम्हें तजनी ही थी तो आर्यिकाओं के समीप छोड़ देते। तुमने करने में कोई कमी नहीं छोड़ी। अब प्रसन्न होकर आज्ञा दो क्या करूं?
यह कह कर रुदन करने लगी तब राम बोले –
मैं जानता हूँ तुम्हारा निर्दोष शील है और तुम निष्पाप अणुव्रत धारिणी मेरी आज्ञाकारिणी हो। तुम्हारी भावना की शुद्धता मैं भली भांति जानता हूँ, परन्तु ये जगत के लोग कुटिल स्वभाव है। इन्होंने तुम्हारा अपवाद उठाया इनका संदेह मिटे वैसा करो।
तब सीता ने कहा–
आप आज्ञा करो सो ही प्रमाण जगत में दिव्य है सो सब कर के पृथ्वी का संदेह दूर करूं। महाविष कालकूट पीऊं? अग्नि की विषम ज्वाला में प्रवेश करूं? आपकी आज्ञा हो सो ही करूं।
एक क्षण विचार कर राम बोले –
अग्निकुण्ड में प्रवेश करो।
बस यही प्रमाण।
तब लोग भयसे व्याकुल होकर आंसू बहाने लगे। राम के आदेश से तीन सौ हाथ कुण्ड खोद कर सूखी चन्दन की लकडी भरवायी गयी। अग्नि प्रज्वलित की गयी। धुए का अन्धकार हो गया। सीता उठी और सिद्धों व तीर्थंकरों को नमस्कार बोली –
मनवचन और काया से सपने में भी राम बिना और पुरुष मैं नहीं जाना। जो मैं झूठ कहती हूँ तो ये अग्नि ज्वाला मुझे भस्म कर दे।

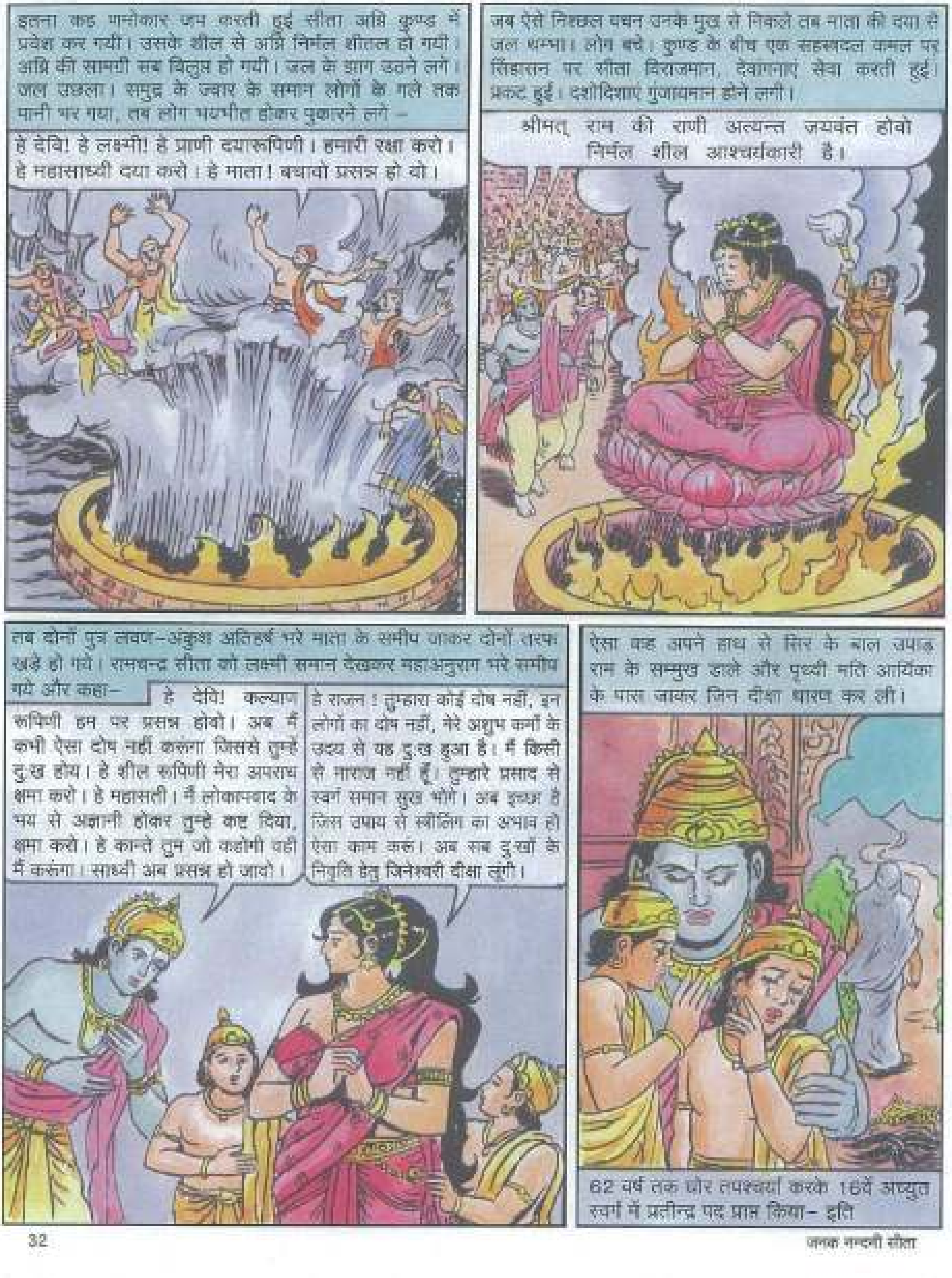
इतना कह मनोकार जप करती हुई सीता अग्नि कुण्ड में प्रवेश कर गयी। उसके शील से अग्नि निर्मल शीतल हो गयी। अग्नि की सामग्री सब विलुप्त हो गयी। जल के झाग उठने लगे। जल उछला। समुद्र के ज्वार के समान लोगों के गले तक पानी भर गया, तब लोग भयभीत होकर पुकारने लगे –
हे देवि! हे लक्ष्मी! हे प्राणी दयारूपिणी। हमारी रक्षा करो। हे महासाध्वी दया करो। हे माता! बचाओ प्रसन्न हो वो।
जब ऐसे निश्छल वचन उनके मुख से निकले तब माता की दया से जल थम्भा। लोग बचे। कुण्ड के बीच एक सहस्रदल कमल पर सिंहासन पर सीता विराजमान, देवांगनाएं सेवा करती हुई प्रकट हुई। दसोदिशाएं गुंजायमान होने लगी।
श्रीमत् राम की राणी अत्यन्त जयवंत होवो निर्मल शील आश्चर्यकारी है।
तब दोनों पुत्र लवण–अंकुश अतिहर्ष भरे माता के समीप जाकर दोनों तरफ खड़े हो गये। रामचन्द्र सीता को लक्ष्मी समान देखकर महाअनुराग भरे समीप गये और कहा–
हे देवि! कल्याण रूपिणी हम पर प्रसन्न होवो। अब मैं कभी ऐसा दोष नहीं करूंगा जिससे तुम्हें दुःख होय। हे शील रूपिणी मेरा अपराध क्षमा करो। हे महासती। मैं लोकापवाद के भय से अज्ञानी होकर तुम्हे कष्ट दिया, क्षमा करो। हे कान्ते तुम जो कहोगी वही मैं करूंगा। साध्वी अब प्रसन्न हो जावो।
हे राजन! तुम्हारा कोई दोष नहीं, इन लोगों का दोष नहीं, मेरे अशुभ कर्मों के उदय से यह दुःख हुआ है। मैं किसी से नाराज नहीं हूँ। तुम्हारे प्रसाद से स्वर्ग समान सुख भोगे। अब इच्छा है जिस उपाय से स्त्रीलिंग का अभाव हो ऐसा काम करूं। अब सब दुःखों के निवृत्ति हेतु जिनेश्वरी दीक्षा लूंगी।
ऐसा कह अपने हाथ से सिर के बाल उपाड़ राम के सम्मुख डाले और पृथ्वी मति आर्यिका के पास जाकर जिन दीक्षा धारण कर ली।
62 वर्ष तक घोर तपश्चर्या करके 16वें अच्युत स्वर्ग में प्रतीन्द्र पद प्राप्त किया– इति

जैन धर्म के प्रसिद्ध महापुरुषों पर आधारित
रंगीन सचित्र जैन चित्र कथा

जैन धर्म के प्रसिद्ध चार अनुयोगों में से प्रथमानुयोग के अनुसार जैनाचार्यों के द्वारा रचित ग्रन्थ जिनमें तीर्थंकरों, चक्रवर्ति, नारायण, प्रतिनारायण, बलदेव, कामदेव, तीर्थक्षेत्रों, पंचपरमेष्ठी तथा विशिष्ट महापुरुषों के जीवन वृत्त को सरल सुबोध शैली में प्रस्तुत कर जैन संस्कृति, इतिहास तथा आचार-विचार से सीधा सम्पर्क बनाने का एक सरलतम् सहज साधन **जैन चित्र कथा** जो मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञान वर्द्धक संस्कार शोधक, रोचक सचित्र कहानियां आप पढ़ें तथा अपने बच्चों को पढ़ावें **आठ वर्ष से अस्सी** तक के बालकों के लिये एक आध्यात्मिक टोनिक **जैन**

सम्पर्क सूत्र :

अष्टापद तीर्थ जैन मन्दिर

विलासपुर चौक,
दिल्ली-जयपुर N.H. 8,
गुड़गाँव, हरियाणा
फोन : 09466776611
09312837240

द्वारा
आचार्य धर्मश्रुत ग्रन्थमाला
एवं
मानव शान्ति प्रतिष्ठान

ब्र. धर्मचन्द शास्त्री
प्रतिष्ठाचार्य

अष्टापद तीर्थ जैन मन्दिर

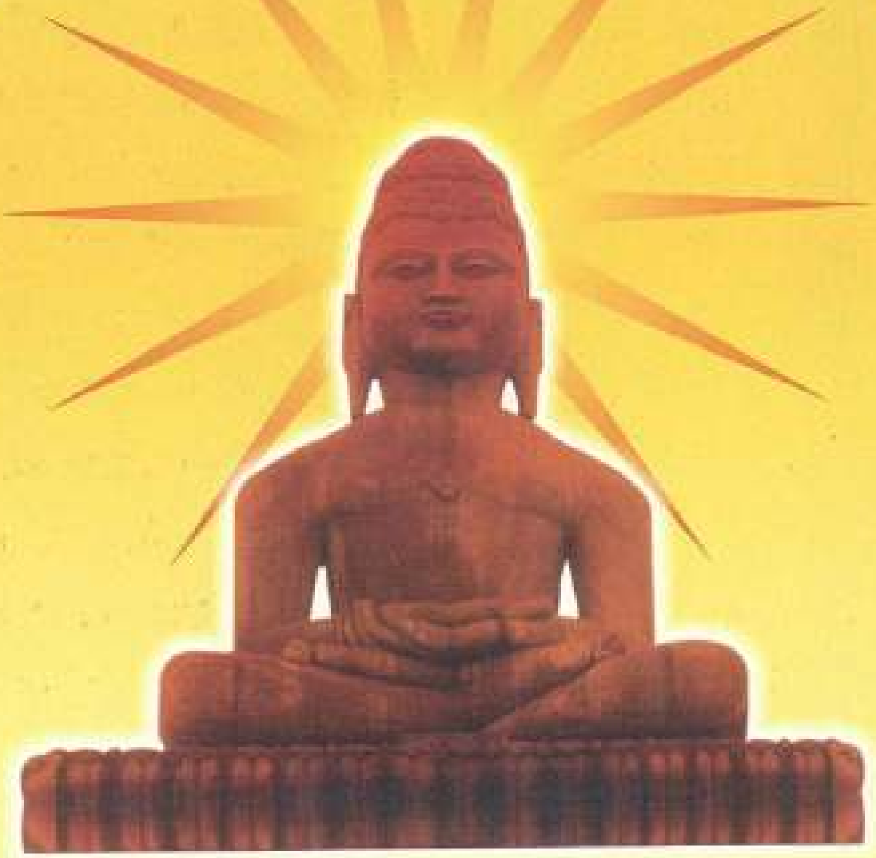

मानव शान्ति प्रतिष्ठान

विलासपुर चौक, निकट पुराना टोल, दिल्ली–जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग 8,
गुड़गांव (हरियाणा) फोन नं. : 09466776611, 09312837240